

Vol. II
No. 18



Tuesday,
14th September, 1954.

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

Business of the House	PAGES 507
L.A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill, 1954—clause by clause reading not concluded	507 187

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 14th September, 1954

The House met at Half Past Two of the Clock

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

Questions and Answers

(SEE PART I)

BUSINESS OF THE HOUSE

شری سید حسن (حیدرآباد سٹی) :— اسپیکر سر۔ ہوائینٹ آف آرڈر۔ اسمبلی رولس کے رول نمبر ۸۳ کے تحت ہاؤس میں وقت ختم ہو جانے کے بعد جو سوالات بیچ جاتے ہیں انکے جوابات ہاؤس کے ٹیبل پر رکھے جانے چاہئیں۔ لیکن جوابات نہ رکھے جائیں تو کیا نہیں دوبارہ پوچھا جاسکتا ہے؟

مسٹر اسپیکر :— ان سوالات کے جوابات ہاؤس کے ٹیبل پر رکھے جاتے ہیں۔

شری سید حسن :— ڈپارٹمنٹ سے جوابات نہ آئیں تو کیا ہوگا؟

مسٹر اسپیکر :— یہ ایک ہیپوتھٹیکل کوئسچن (Hypothetical question) ہے۔ ایسی کوئی خاص صورت ہو تو آپ مجھ سے کہہ سکتے ہیں۔

شری سید حسن :— میں اس ہوائینٹ پر رولنگ چاہتا ہوں۔

مسٹر اسپیکر :— ایسے ہیپوتھٹیکل کوئسچن پر رولنگ دینا مناسب نہیں۔ ایسی کوئی صورت ہو تو آپ میرے علم میں لائیں۔

L.A. Bill No. XXXIII of 1954, The Hyderabad Forest (Amendment) Bill, 1954.

The Minister for Excise, Forests and Revenue (Shri K. V. Ranga Reddy) : Sir, "I beg to introduce L. A. Bill No. XXXIII of 1954, the Hyderabad Forest (Amendment) Bill, 1954."

Mr. Speaker : The bill is introduced.

Report of the Select Committee on The Hyderabad District Boards Bill, 1952,

The Minister for Local Govt. & Education : (Shri Gopal Rao Ekbote) : Sir, "I beg to present to the House the report of the

Select Committee on the Hyderabad District Boards Bill, 1952.

Mr. Speaker: The report is presented.

L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill, 1954.

Clause 40—(Contd.)

*శ్రీ పెండె వాసుదేవ్ (గజ్వల్) :—అధ్యక్షమహాశయ, నిన్న రంప క్లాజుగురించి ముతాఖాత్ విషయంలో మాట్లాడుతుండగా టైము అయిపోయింది; అందుచే నేను చెప్పవలసినది యింకా కొంత మిగిలిపోయినది. అయితే ఇప్పుడు చెప్పదలచినదేమంటే, అక్కడ కూర్చోన్న దేశభక్తులు రెండు తడవలు సత్యగ్రహించేసి ఐదారు సంవత్సరాలు జైలు జీవితం గడిపి వచ్చినవారు చెప్పారు. వారిని అడుగుతున్నాను—ఆ రోజుల్లో వారు జైలులో వున్నప్పుడున్న ముతాఖాత్ పద్ధతికి ఇప్పుడున్న ముతాఖాత్ పద్ధతికి తేడా వున్నదా? లేదా? ఆ విషయం చెప్పమని అడుగుతున్నాను. ఈనాడు ముతాఖాత్ కు పెట్టిన పద్ధతి ఆ సైజాంకాలంలో వున్నదని ఎవరూ చెప్పజాలరు. ఆ రోజులలో జైలుకు ముతాఖాత్ కొరకు వచ్చినవారిని ఏవిధంగా గౌరవించేది, ఆపద్ధతి ఏవిధంగా వుండేది అందరికీ తెలుసు ఈనాడు పూర్తిగా మానవత్వం లేకుండా అమానుషంగా ఈ ముతాఖాత్ పద్ధతి జరుగుతోందే అనాడు లేని పద్ధతిని ఈనాడు ఎందుకు చేస్తున్నారో అర్థమవుతోంది. నిన్న ఈ విషయాన్ని చెప్పాను. ఈ క్లాజును మంత్రిగారు పునరాలోచించి యిప్పుడువున్న పద్ధతిని తొలగించి కనీసం అరగంటకు తక్కువ గాకుండా వాళ్ళకు ముతాఖాత్ జరిపించే ఏర్పాటు చేయాలని కోరుతున్నాను. శిక్షపడ్డవాళ్ళకు కూడా ముతాఖాత్ పద్ధతి తీసుకరావాలి. శిక్షపడ్డవాళ్ళకు కూడా భార్య భర్తలు పిల్లలూ కలుసుకునే ఏర్పాటు చేయాలి. శ్రీ కె. అనంతరామారావుగారు ఒక సవరణ తెచ్చారు దానిని మంత్రిగారు తప్పక అంగీకరించాలని కోరుతున్నాను.

*శ్రీ కె. రామచంద్రారెడ్డి : మిస్టర్ స్పీకర్, సర్, ఈ రంప క్లాజులో ప్రధానంగా ఖైదీలను గురించి రెండు విధాలుగా వుంది. పోలీసుయాక్టు తరువాతకూడా ఈ విచక్షణాపద్ధతి యంతరకు కొనసాగుతోంది. జైలులోవున్న కమ్యూనిస్టులను దర్శించాలని వారి భార్యల ఓడ్డలుగాని తల్లిదండ్రులుగాని స్నేహితులుగాని పెళ్ళి దర్శించాలంటే ఆయా ప్రాంతాల పోలీసు ఇన్స్పెక్టర్ల యివంమీద ఆధారపడి వుంటుంది. ఖైదీల లిస్టు జిల్లా పోలీసు మోహత్తీంకు పంపిస్తారు. ఎవరికి ముతాఖాత్ కు అనుమతి యివ్వాలి, ఎవరికి యివ్వకూడదు అనే విషయం ఆయా ప్రాంతాల పోలీసు ఇన్స్పెక్టర్ల యివ్వంమీద ఆధారపడి వుంటుంది. ఈ పద్ధతి ఇప్పటివరకూ కొనసాగుతోంది. ఖైదీలకు సంబంధించిన కేసుల విషయం పై రివీచేయడానికి, ఖైదీల సలహా సీసుకొనేందుకు, వారి బంధువులకు గాని స్నేహితులకు గాని అవకాశాలు కల్పించాలి. ఎవరివిషయంలోనూ విచక్షణ చూపించకుండా చేయాలని మంత్రిగారిని కోరుతున్నాను. ఖైదీలకు ఇష్టపడే సౌకర్యాలు జైలు మ్యూనుఅట్ లో కలుగజేస్తామంటారేగాని ఈ చట్టంలో తీసుకురారు. జైలు మ్యూనుఅట్ లో అయితే, వారికి యిష్టమన్నవి చేర్చవచ్చును. తేకపోతో నూనికేయి వచ్చు. ఈ చట్టంలో మాత్రం ఖైదీలను నిర్బంధించడానికి సంబంధించిన విషయాలే తీసుకు వస్తున్నారు. ఇప్పుడే ఇక్కడ సంగపు వెంకటాచారిని గురించి ప్రశ్నవేయడం జరిగింది. వారిని దర్శించాలంటే ఆ జిల్లాకు సంబంధించిన పోలీసు మోహత్తీం అనుమతి వుంటేనే వీలవుతుంది. అటువంటి విచక్షణ

شری رام لنگا سوامی (کبیچ) : مسٹر اسپیکر سر۔ اپوزیشن کی جانب سے جو ترمیم اس دفعہ پر لائی گئی ہے اس سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ اس دفعہ کی وسعت کو اور محدود کرنا چاہتے ہیں۔ یہاں یہ رکھا گیا ہے کہ ملاقات کی اجازت مناسب طریقہ پر مناسب وقت پر دی جائے گی۔ ہو سکتا ہے کہ مناسب سمجھا جائے تو ہفتہ میں ایک سے زائد مرتبہ بھی ملاقات کی اجازت دی جائے۔ اس ترمیم سے تو پندھن عائد ہو رہا

ہے دیوانی مقدمات میں جو قیدی مقید ہوتے ہیں انکے متعلقین کے لئے جو سہولتیں رکھی گئی ہیں وہ مناسب ہیں لیکن وقت کے بارے میں کوئی سوال پیدا نہیں ہوتا ۔ اس لئے ترمیم مناسب نہیں ہے۔

ڈپٹی مینسٹر ہوم (شری شریनिवासरव अखेलीकर):—स्पीकर सर, दफा ४० के मुतालुक जो तरमीमात आयी है और जो बहस की गयी है उन दोनों में मुताबिकत् नहीं है। पहली अमेंडमेंट यह है कि 'सिविल और अनकन्विकटेड क्रिमिनल्स' के शब्दों को ओमित किया जाय। दूसरी यह है कि 'अंडरट्रायल' के लब्ज को ओमित किया जाय और तीसरी अमेंडमेंट में 'प्रोवायडेड देंट' कह कर विजिटर्स के बारे में बहुत कुछ बताया गया है। सिर्फ यह प्रोजन करने के लिये यह दफा बतायी गयी है जो सिविल और अनकन्विकटेड प्रिजन्स होते हैं उनकी मुलाकात के बारे में क्या प्रोविजन होना चाहिये और इसमें यह अमेंडमेंट लायी गयी है कि 'सिविल और अनकन्विकटेड क्रिमिनल्स' के अल्फाज निकाले जायें तो इसका मतलब यह हो जायेगा कि सब तरह के क्रिमिनल्स इसमें आ जायें। मेरे खियाल से इस तरमीम की जरूरत नहीं है। दफा ६० के जिमन २४ में इसके लिये प्रोविजन मौजूद है। इसमें उनके लिये अलाहिदा प्रोविजन मौजूद है। इस लिहाज से फिर यहां पर ये अल्फाज रखना जरूरी नहीं है। इसी तरह से लाइन ५ में 'अंडरट्रायल' का लब्ज निकाल देने से और प्रिजन्स का लब्ज रखने से यह दफा सब पर हावी हो सके यह, मतलब होगा। लेकिन इसके लिये अलाहिदा प्रोविजन रूल्स के लिहाज से है, इसलिये इसकी भी जरूरत नहीं है। तीसरी अमेंडमेंट के बारे में यही कहूंगा कि ये तमाम चीजें रूल्स के तहत आती हैं। सिर्फ प्रोविजन्स बनाने के लिये यह दफा है और यह कानून है। इसलिये ये चीजें इसमें नहीं आ सकतीं। दफा ६० के तहत जेल मैन्युअल में ये सब मौजूद है। दफा ६० के तहत ये चीजें आती हैं, दफा ४० के तहत नहीं आ सकतीं। अतः वजूहात से मैं इस तरमीम को कबूल नहीं कर सकता। मैं अुमीद करता हूं कि यह अमेंडमेंट वापिस ली जायेगी।

شری اے۔ گرو ریڈی (سیدی پیٹھ) :— اس کے بارے میں منسٹر صاحب نے کچھ نہیں فرمایا ۔

شری. श्रीनिवासरव अखेलीकर:—दफा ६० में वह अस्तित्थार गवर्नमेंट को दिया गया है और अक्ट में दफा ६० मौजूद है और उसके तहत अपाजिटमेंट करने का अस्तित्थार दिया गया है तो दूसरी जगह इसकी जरूरत नहीं है।

شری اے۔ گرو ریڈی :— دفعہ ۷ میں ایسے کلازس کے بارے میں رولس بنانے کا اختیار رکھا گیا ہے جو اس میں ہوں لیکن جو کلاز اس میں موجود نہو اسکے بارے میں رولس کیسے بنائے جا سکتے ہیں ۔

'consistent with this Act'; that means all the clauses which are already there.

شری کے۔ انت رام راؤ (دیورکنڈہ) :— دفعہ ۷ میں ملاقات کے بارے میں رولس بنانے کا اختیار نہیں ہے پھر کس بنا پر آپ کہہ رہے ہیں ۔

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—दफा ६० के जमान २४ में 'कम्युनिकेशन विथ दि प्रेजेंट' लिखा गया है । उसमें सब चीजें आती हैं ।

(Amendment to amendment) مسٹر اسپیکر :—کیا آپ اپنے امینڈمنٹ ٹو امینڈمنٹ

کو ووٹ پر رکھنا چاہتے ہیں -

**Shri A. Gurva Reddy* : Yesterday, I have spoken, Sir. In Clause 60, there is a provision for appointment and guidance of visitors of prisons. But in this whole Bill there is no clause empowering the Government to appoint such visitors. So, I think some provision must be made somewhere in the Bill for that purpose. That provision has not been made. I think, in the rule-making clause they may be providing for this. It is in respect of that, that I have given notice of my amendment.

Mr. Speaker : Shall I put the amendment to the amendment of Shri A. Gurva Reddy to vote ?

Shri A. Gurva Reddy : The question will arise only if the Mover of the amendment does not accept my amendment.

Shri K. Ananth Rama Rao : I accept the amendment to the amendment of Shri A. Gurva Reddy.

Mr. Speaker : I shall then put the amendment of Shri K. Anantha Rama Rao as amended by Shri A. Gurva Reddy to vote. The question is :

“(a) That In line 3 : omit ‘civil or unconvicted criminal’.”

(b) In line 5 : omit ‘under-trial’.

(c) After line 7 add :

‘Provided that—

(a) such visits to the prisoners shall not be less than twice a week ;

(b) no other person shall be allowed to be present within the distance of hearing at the time of interview ;

(c) no restriction amounting to discrimination on political grounds shall be made ;

(d) no curtain shall be allowed to intervene between parties having interviews.

(e) Non-official jail visitors shall be allowed to visit the prisoners and talk with them."

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

"That Clause 40 stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clause 40 was added to the Bill.

Clauses 41 & 42.

Mr. Speaker : The question is :

"That clauses 41 & 42 stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clauses 41 & 42 were added to the Bill.

Clause 43.

Shri Ankushrao Ghare (Partur) : I beg to move :

"That in line 8 : for 'in his presence' substitute 'within his jurisdiction'."

Mr. Speaker : Amendment moved.

श्री. अंकुशराव घारे:—स्पीकर सर, क्लॉज ४२ के तहत अन्वार्थराभिज्ज आर्टिकल या और गुनाह प्रिजन अफसर के सामने हुवा हो तो अुसके लिये क्या कारवाही की जायगी, अिसको क्लॉज ४३ में रखा गया है । और अुसके तहत जब कभी भी कोअी अनलाफुल् अॅक्ट कोअी आदमी करेगा तो अुसका रिपोर्ट पुलिस अफसर के पास प्रिजन अफसर को देना चाहिये । लेकिन अिसमें यह रखा गया है कि—

"as if that offence has been committed in his presence."

जब कि यह मामला मैजिस्ट्रेट के सामने जानेवाला है, इंडियन पीनल कोड या क्रिमिनल प्रोसीजर कोड के तहत वह कारवाही किसी कोर्ट में जायेगी और अेवीडन्स अॅक्ट की तारीफ में भी वह आजायगी ती अैसे हालात में जब कोअी अनलाफुल् अॅक्ट हुवा तो अुसके बारे में रिपोर्ट प्रिजन आफिसर पुलिस आफिसर के पास देने के बाद वह अुसके जुरिस्टिक्शन में वह अफेन्स में हुवा असा समझा जायेगा । अिससे कानूनो दिक्कत पैदा होगी ।

अगर क्रिमिनल प्रोसीजर के तहत मुकदमा चलाया जायेगा तो अवेडीन्स के बारे में दिक्कत होगी। जिसलिये मैंने यह तरमीम लायी है। मैं आशीर्वाद करता हूँ कि मेंबर अन्चार्ज आफ दि बिल जिसको कबूल करेंगे।

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—स्पीकर सर, क्रिमिनल प्रोसीजर कोड में दो किस्म के प्रोविजन्स हैं। एक यह कि अउसके जुरिस्टिक्शन में कोअी जुर्म होता है तो अउसके बारे में अउसको कुछ अख्ति-यारात होते हैं और अक़ असा जुर्म जो अउसके सामने नहीं होता अउसके अरेस्ट के बारे में खास अख्ति-यारात पुलिस आफिसर को होते हैं। यहां अरेस्ट के अख्ति-यारात का सवाल जिसके माजिन में लिखा गया है कि 'पावर टु अरेस्ट फार अफेन्स अंडर सेक्शन' यानी यह अरेस्ट कि हद तक है। जेल के अंदर जो वाकया होता है हालांकि वह जेल के आफिसर के सामने होगा तब भी असा समझा जायेगा कि वह पुलिस आफिसर के सामने हुवा है। जिसके तहत अरेस्ट के अख्ति-यारात पुलिस को दिये गये हैं। यह आम तफतीश के बारे में नहीं है। किसी पुलिस आफिसर के सामने कोअी वाकया हुवा तो, बिदाअट वारंट वह अरेस्ट कर सकता है, असा क्रिमिनल प्रोसीजर कोड में प्रोविजन है। वहां अख्ति-यार दिया गया है। जिसलिये जिस अमैडमेंट को कबूल करने की जरूरत नहीं है।

Shri Ankushrao Ghare : I beg leave of the House to withdraw my amendment.

The amendment was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“That clause 43 stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 43 was added to the Bill.

Clause 44.

Shri Sripatrao Kadam (Bhir) : I beg to move :

“That in line 8 : for ‘vernacular’ substitute ‘regional language’.”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri Sripatrao Kadam : Mr. Speaker, Sir. This is a minor amendment through which I seek to substitute the words ‘regional language’ for the word ‘vernacular’. I am fully aware of the fact that practically every administrative branch has adopted the use of regional language at district levels, and here I

believe the draftsmen while drafting the Bill must have meant 'regional language' by using the word 'vernacular'. What I say is, the use of the word 'vernacular' is most improper. In Latin, the word 'verna' means a home-born slave and 'vernacular' means the language of the slave. So many of us through ignorance and also unknowingly have retained the use of this nomenclature, but this is improper as we are enacting this Bill in our fifth year of the Republic. This sentiment has been expressed even by Pandit Jawaharlal Nehru in his autobiography.

I request the hon. Minister to accept my amendment without any hesitation. Thank you.

Shri L. K. Shroff (Raichur) : I have nothing to add further in support of my amendment.

Shri Shrinivas Rao Ekhelikar : I accept the amendment.

Mr. Speaker : The question is :

"That clause 44, as amended, stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clause 44, as amended, was added to the Bill.

Clause 45.

Shri K. Venkatrama Rao (Chinnakondur) : I beg to move :

"Omit lines 3, 4 and 5".

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri K. Venkiah (Madhira) : I beg to move :

"Omit lines 7 and 8."

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri K. Anantha Rama Rao : I beg to move :

"Omit lines 9, 13 and 14".

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri A. Ramachandra Reddy (Ramayanpet): I beg to move:

“Omit lines 11, 12, 18, and 19”.

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri B. D. Deshmukh : (Bhokardan-General): I beg to move:

“Omit line 22”.

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri B. D. Deshmukh: I beg to move:

“Omit lines 23 and 24”.

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri R. B. Deshpande : (Pathri): I beg to move:

“That in lines 23 and 24, omit: ‘officer or’.”

Mr. Speaker: Amendment moved.

* شری کے۔ وینکٹ رام راؤ:— دفعہ ۴۰ پیرا گراف (اے) کے تعلق سے جو رکھا گیا

ہے وہ یہ ہے

‘Such wilful disobedience to any regulation of the prison as shall have been declared by rules made under section 60 to be a prison-offence’

اس سلسلہ میں (۱۰ و ۱۶) تک جو جرائم ہو سکتے ہیں ان کا حوالہ دیا گیا ہے۔ حوالہ دیتے ہوئے اس میں ایک پیرا گراف میں یہ رکھا گیا ہے کہ ایسے جرائم سے جنکا تعلق ہو آئندہ قواعد بنائے جائیں گے۔ ان کے تحت جو خلاف ورزیاں ہونگی انکے تحت جو سزائیں دی جائیں گی ان کا تعلق دفعہ ۴۰ کے جرائم سے ہوگا۔ یہ ایک جامع قانون بنایا جا رہا ہے اس میں جرائم کی کافی لمبی چوڑی فہرست دی گئی ہے اس کو بھی کافی نہیں سمجھتے ہوئے دفعہ ۶ کے تحت مزید بعض جرائم کا تعین کرنے والے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ کسی چیز کو ایکٹ کے تحت جرم قرار نہ دیا جائے تو اسکے لئے کوئی پراویژن نہیں رکھتے ہیں۔ تو اسکو قواعد بنانے والی اتھارٹی (Authority) کے حوالہ نہیں کیا جا سکتا۔ کیونکہ جو چیز قانون میں نہیں ہے وہ قواعد میں نہیں آسکتی۔ قواعد ہمیشہ قانون کے کنسٹنٹ (Consistent) رہنا چاہئے۔ اس طرح رہنے سے یہ

ہوگا کہ پورے قانون میں ایک ہی دفعہ، دفعہ (۶۰) رکھ دیں تو کافی ہوگا۔ جتنی بھی چیزیں ہیں اون کے متعلق قواعد بنائے جائیں گے اوس کی خلاف ورزی قابل سزا ہوگی۔ اس طرح کی جو ڈرافٹنگ ہوئی ہے وہ بیڈلا (Bad law) تصور کیجا سکتی ہے۔ اس لئے میں عرض کرونگا کہ دفعہ (۶۰) کے تحت کونسی چیزیں آسکتی ہیں اون کی صراحت دفعہ (۴۵) میں کیجاتی تو ٹھیک تھا تاکہ لیجسلیچر کو اس پر غور کرنے کا اختیار رہتا۔ اور اوس پر اسکروٹی (Scrutiny) کرنے کا موقع رہتا۔ اس لئے موجودہ ترمیم کو اس دفعہ میں انسرت (Insert) کرنے کے بغیر اونکی اسکروٹی کا موقع اسمبلی کو نہیں رہیگا۔ قواعد بنتے ہیں اور جریدہ میں آجاتے ہیں لیکن جریدہ میں آنے کے بعد بھی سب آرڈینیٹ لیجسلیشن (Subordinate Legislation) اوس پر غور نہیں کر سکتی۔ اس لئے لیجسلیچر کو ڈارکنس (Darkness) میں رکھتے ہوئے بعض جرائم اور پراویژنس کو اس دفعہ میں انکارپوریٹ (Incorporate) کرنے کی جو کوشش کی گئی ہے وہ اصولاً صحیح نہیں ہے اور قانون کی ڈرافٹنگ کے لحاظ سے بھی ٹھیک نہیں ہے۔

Shri K. Venkiah: The lines 7 and 8 carry more or less the same meaning. The use of insulting or threatening language, immoral or disorderly behaviour is sought to be made an offence. Of course, I am aware that this concerns the Criminals in jails. These prisoners are generally poor. We do not expect big landlords or Zamindars, who talk in an unmannerly and indecent manner, to go to jail authorities. Even outside the jail, we find many people who are of the same type, addressing the big lords as 'Dora' (దొర) ()

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :— स्पीकर सर, माननीय सदस्य कागज पर लिखा हुआ कोकी पेसेज पढ़ रहे हैं ऐसा मालूम होता है।

Shri K. Venkiah: It is not so. I could have spoken in Telugu, but because the hon. Minister does not know that language, I am forced to speak in English though I do not know it properly. Somehow or other to accommodate the Minister I am speaking in English.

I was saying that the poor people in the jail know how to address the jail authorities. But unfortunately the prisoners are made to work like slaves and they are always afraid of the jail authorities. I know there are certain jail superintendents who like formalities. One Superintendent wants the prisoner to sit down when he goes over the rounds, because he is afraid that if the prisoner stands, he may do some harm to the officer. Some other Superintendents like the prisoners to stand always, because he thinks it is below his dignity that

a prisoner sits when he himself stands. There are different varieties of officers in the jails. Therefore, this clause will not in any way be useful to the prisoners, but on the other hand it will give more scope to the jail authorities to tease and harras the prisoners. I have some experience of how this 'disorderly behaviour' is interpreted by the officers. As a detenue I was not allowed to stand freely in the presence of an ordinary Jamedar in the jail. On one occasion I had to ask the Jamedar something. I was standing at ease, but the Jamedar got wild and he demanded me to stand erect and behave like an obedient servant in his presence. When an ordinary Jamedar's behaviour is like this and that too before a political detenue, what should we expect from an officer towards an ordinary criminal? This clause in some way or other gives lot of scope to the jail officers to tease the criminals, just to punish the prisoners whenever they please. I would therefore, request the hon. Minister to accept to the deletion of these two lines from this clause and accept my amendment.

* شری کے - انت رام راؤ :- میری ترمیم دفعہ (۵) سے متعلق ہے - اوس میں ضمن (۵) اور (۸) کو حذف کرنیکی نسبت میں نے ترمیم پیش کی ہے۔ اس دفعہ میں اون افعال کی صراحت کی گئی ہے جو اگر قیدیوں سے سر زد ہوں تو جرم کی حد تک پہنچ جائیں گے - میں سمجھتا ہوں کہ یہ افعال بہت معمول ہیں - اوس کے علاوہ جیل میں پہلے ہی قیدی کافی سزا بھگتتے ہیں - اب ایسی چیزیں بھی جن کا ذکر اس دفعہ میں کیا گیا ہے عہدہ داروں کے اختیار میں دیدی جائیں گی تو اون کو قیدیوں کو ستانے کا موقع ملے گا - اوس کے علاوہ اس میں بعض چیزوں کا طے کرنا مشکل ہے - جیسا کہ ضمن (۵) میں کہا گیا ہے - (" Wilfully disabling himself from Labour ") یعنی کوئی شخص اپنے آپ کو ایسا معذور نہ بنائے کہ وہ کام نہ کر سکے - یہ کونسی صورتیں ہو سکتی ہیں اون کا معلوم کرنا بہت مشکل ہے - مثلاً کام کرتے کرتے کسی قیدی کا ہاتھ چھری سے کٹ جائے تو یہ ایک بہانہ افسروں کو مل جائے گا اور وہ اس بہانے سے قیدیوں کو ستائیں گے - قید خانے میں ایسے افعال کی تحقیقات بھی باضابطہ نہیں ہوتی کیونکہ قیدیوں سے ایسے افعال کے متعلق جو جرم کی حد تک پہنچتے ہیں اپنی صفائی کا موقع بھی نہیں رہتا - ساتھ ہی قیدیوں کے بیانات پر بھی بھروسہ نہیں کیا جا سکتا - اس لئے یہ طے کرنا بہت مشکل ہے کہ کونسے افعال جرائم کی حد تک پہنچتے ہیں - اور پھر یہ بھی ہے کہ ایسے افعال سر زد کرنے کی صورت میں ٹاٹ پتری پہنائی جائیگی اور بیڑیاں ڈالی جائیگی - یہ بہت سخت سزائیں ہیں اور اون افعال کی تحقیقات ہونا بھی مشکل ہے - اس لئے میں نے ان افعال کو ترمیم کے ذریعہ حذف کرنے کی کوشش کی ہے -

شری اے۔ راجپندرا ریڈی :- میں نے دفعہ (۴۵) میں لائنس ۱۱-۱۲-۱۸ اور ۱۹ کو حذف کرنے کی ترمیم پیش کی ہے۔ میں اونکو غیر ضروری سمجھتا ہوں۔ اس قانون کے دفعہ (۴۶) کے تحت سہتم جیل یا جیلر کو اختیار ہے کہ اگر کوئی قیدی قانون کی خلاف ورزی کرے یا ڈسپلن کے خلاف چلے تو قیدی کو تین مہینے تک سزا ہاتھ میں ہتکڑی اور پاؤں میں ڈنڈے ڈال دے۔ اس قسم کی سزائیں اس مہذب زمانہ میں اور اس جمہوری دور میں جائز نہیں ہیں۔ اگر حقیقت میں کوئی قیدی خلاف ورزی کرتا ہے یا ڈسپلن کے خلاف جاتا ہے تو دوسری قسم کی سزائیں دی جا سکتی ہیں۔ مثلاً بعض قیدیوں کو سہینے میں دو مرتبہ ملاقات کا حق دیا جاتا ہے سزایاب قیدیوں کو ایک مرتبہ ملاقات کا حق ہے۔ یہ حق ختم کیا جا سکتا ہے۔ جیل کے قواعد کے تحت قیدیوں کو معافی دی جا سکتی ہے وہ معافی بند کر دیجائے۔ اس قسم کی معمولی سزائیں دیجانی چاہئے۔ مگر اس دفعہ کے تحت کڑی سے کڑی سزا دینے کے متعلق رکھا گیا ہے۔ اور اس کا اختیار سہتم جیل یا جیلر کو جو دیا گیا ہے وہ ٹھیک نہیں ہے۔ سہتم کے صوابدید پر اسکو چھوڑ دینا ٹھیک نہیں ہے۔ اس سے پہلے معزز رکن نے یہ کہا ہے کہ کئی سہتم ایسے ہیں جب راؤنڈ کو جاتے ہیں تو قیدیوں کا کھڑا رہنا پسند نہیں کرتے۔ بعض سہتم قیدیوں کا بیٹھنا پسند نہیں کرتے۔ اسکو خلاف ورزی سمجھکر سزا دیتے ہیں۔ اور اس قسم کی خلاف ورزی کی صورت میں تین مہینوں تک اون کے ہاتھوں میں ہتکڑی اور پاؤں میں اڑڈنڈے ڈال دیتے ہیں۔ جس وقت یہ بل اس ایوان میں پیش ہوا تو اس طرف اور اس طرف کے چند آنریبل ممبروں نے سخت تنقیدیں کی تھیں اوس وقت آنریبل موور آف دی بل نے یہ وعدہ کیا تھا بعض چیزوں کے متعلق غور کریں گے اور غور کرنے کے بعد اون کو حذف کر دیں گے۔ میں آنریبل موور سے یہ کہوں گا کہ جو سزائیں ہیں وہ وحشیانہ ہیں اور آج کے جمہوری زمانہ میں ٹھیک نہیں۔ مجھے امید ہے کہ وہ دفعہ (۴۵) کی لائنس ۱۱-۱۲-۱۸ اور ۱۹ کو حذف کرنا منظور کر لیں گے۔

* شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ :- میری ترمیم دفعہ (۴۵) کے ضمن ۱۳-۱۴ کے بارے میں ہے۔ فرسٹ ریڈنگ کے موقع پر اس جانب کے ارکان نے موور آف دی بل کی توجہ اس جانب مبذول کروائی تھی کہ پریزن آفس (Prison offence) کے لئے سخت سے سخت سزا رکھی گئی ہے۔ دفعہ (۴۵) میں جو آفس بتلائے گئے ہیں وہ معمولی قسم کے ہیں روزمرہ کا کوئی طرز عمل بھی اس قسم کا آفس ہو سکتا ہے۔ اس کے لئے بھی جو سزا دفعہ (۴۶) میں رکھی گئی وہ کڑی سے کڑی ہے۔ جو آج کے زمانہ میں موزوں اور مناسب نہیں سمجھی جا سکتی۔ مہذب حکومتوں کا جیل کے بارے میں اصلاحی تصور ہوتا ہے۔ اس سلسلہ میں میں نے پنڈت نہرو کا کوٹیشن بھی کل موور کے سامنے رکھا تھا۔ میں پھر وہی اون کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ پنڈت نہرو نے جیل لائف (Jail life) میں اپنے لڑکی کے نام جو خط لکھا ہے اوس کا سرسری مطالعہ کریں تو معلوم ہوگا کہ پریزن آفس کے سلسلہ میں جو سزائیں رکھی گئی ہیں اونکے بارے میں خود اونکے نیتا کے کیا خیالات تھے۔ اون تمام سزاؤں کو انہوں نے خود بری نگاہ سے دیکھا ہے۔ چنانچہ

اوس سے متاثر ہو کر انہوں نے سنہ ۳۳ ع یا ۳۰ ع میں اپنے خیالات ظاہر کئے ۔ اس سے معلوم ہوگا کہ اوس زمانہ میں انگریزوں کا جو قانون تھا اوس کی لفظ بہ لفظ کاپی یہ قانون ہے ۔ میں سمجھتا ہوں کہ پنڈت نہرو کے وہ اعتراضات اس بل کے بارے میں جوں کے توں منطبق ہوتے ہیں ۔ چونکہ موور آف دی بل ہمارے خیالات کا احترام نہیں کرتے اس لئے ہم نے یہ محسوس کیا کہ خود اون کے نیتا کے جو خیالات ہیں وہ آپ کے سامنے رکھے جائیں ۔ آپ رات کو گھر میں بیٹھ کر پنڈت نہرو کی آٹو بائیو گرافی (Autobiography) کا سر سری ہی سہی مطالعہ کریں تو معلوم ہوگا کہ میری ترمیم جو (۱۳) اور (۱۴) کو حذف کرنے کے بارے میں ہے درست معلوم ہوگی ۔ مجھ سے قبل بھی دوسرے ممبروں نے ان کو حذف کرنے کے متعلق ترمیمات پیش کی ہیں ۔ اگر کوئی پرزور بیماری کا اظہار کرے اور اس کو کوئی بہانہ محسوس کریں تو ڈاکٹر سے معائنہ کروایا جا سکتا ہے لیکن اسکے لئے سیلولر کنفائنمنٹ (Cellular confinement) سپرٹ کنفائنمنٹ (Separate confinement) ڈنڈے ۔ ٹی رکھنا اور کاہلی کا الزام لگا کر یہ سزائیں دینا مناسب نہیں ہے ۔ دوسرے مہذب ممالک میں یہ عمل نہیں ہے ۔ اور یہ جمہوریت پر ایک بد نما داغ ہے ۔ یہاں یہ ہے کہ

“wilfully brings a false accusation against an officer or prisoner”

کوئی ملازم کسی پرزور کے بارے میں شبہ کا اظہار کر کے اس پر اتہام لگا سکتا ہے ۔ آپ اس کے بیان کی تحقیقات کروا سکتے ہیں لیکن اس کو ایک آفس (Offence) ٹھہرا کر سزا دینا مناسب نہیں ہے ۔ اور پھر جیل میں ہر کام کی نگرانی کرنے والے نگران کار تو رہتے ہی ہیں وہ ہمیشہ نگرانی کرتے رہتے ہیں ۔ اس بارے میں اوس جانب کے آنریبل ممبرس نے بھی اظہار خیال کیا ہے ۔ آنریبل موور آف دی بل سے کہہونگا کہ وہ کم از کم نہرو جی کے احساسات کا احترام کرتے ہوئے میری ترمیم کو قبول کر لیں ۔

Shri R. B. Deshpande : Mr. Speaker, Sir. My amendment is about the removal of two words “officer or” in sub-clause 14 of clause 44. As a prisoner in Aurangabad Central Jail I have had a lot of experience about the troubles and dangers that arise from the quarrels between one prisoner and another prisoner on the one hand, and between a prisoner and the jail officer on the other hand. While giving this amendment I have got clearly two situations in my mind. One situation is that a prisoner sometimes happens to bring wilfully a false accusation against another prisoner in the prison house; the second situation is that one prisoner happens to bring wilfully a false accusation against a jail officer. When we take into consideration the first situation namely, a quarrel between one prisoner and another, the matter,

of course, is very simple because when there is a quarrel between two prisoners and both are prisoners it is very easy to bring in evidence and the matter can be adjudged very easily. But when a prisoner brings wilfully a false accusation against any jail officer it is very difficult to get evidence in that case. For instance, I shall quote one very peculiar incident that happened in the jail before my very eyes. The jail officer has got all the control in his hands with regard to the distribution of milk and other articles. There was once a sweeper prisoner in the Aurangabad Central Jail who used to get a particular quantity of milk from the Jail Medical Officer and one day he brought a wilfully false accusation against the Medical Officer. The matter was taken into consideration; but how to prove the false accusation against the jail officer? A conference was called for and the result was for want of adequate evidence against the jail officer, the matter had to be dropped altogether. Therefore, from that time onwards we came to understand in the jail that that sweeper prisoner had great grudge against the Medical Officer for a long time. One day it happened—it is a very unfortunate incidence of course—that the sweeper prisoner took a bucket full of human excreta and hid himself in one corner and was just waiting for the jail medical officer. As soon as he came there, the sweeper prisoner got out of the hiding place and poured the human excreta upon the jail officer. Of course, in this particular instance it was very easy to judge the offence, and he was punished for that offence,—he had to be put in for several days in the cell. So, in order to avoid all these difficulties and dangers in the jail life my amendment is that the two words, namely, “officer or” should be omitted. Therefore, if these two words are removed, the line will read thus :

“wilfully bringing a false accusation against any prisoner”

But if these words are retained there will be so much difficulty in getting evidence. Thus, there will be no complaint against any jail officer, and I request the hon. Member-in-charge of the bill to accept in deleting these two words.

Shri L. K. Shroff : Though I have not moved my amendment, I would like to speak a few words on the amendment moved by Shri R. B. Deshpande. It is not as if that false complaints are made by prisoners against a jail officer and it is difficult to prove those false complaints, but quite the

opposite often happens. The prisoner makes a bona fide complaint against the jail officer but it is difficult for him to prove that complaint, because the jail officer, as you all know, is all powerful in his own way. Even a genuine complaint made by a prisoner against a jail officer can not be proved for the simple reason that other prisoners or other jail officers who may be present will not dare to come forward to give evidence for the fear that some punishment might fall upon them afterwards. Therefore, it is quite necessary that these two words "officer or" be removed from that sub-clause. I have no more to add.

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—अध्यक्ष महोदय, मैंने जब इसके पहले क्लॉजेस मूव्ह किये जा रहे थे तभी कहा था कि यदि कोअी रिझनेचल अमेंडमेंट हो तो मैं उसे जरूर कबूल करूंगा। दफे ४५ में ६ और ७, के जो अमेंडमेंट्स पेश किये गये हैं उन्हें तो मैं कबूल कर लेता हूं।

Mr. Speaker : Amendments 6, and 7 accepted.

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—दूसरे जो अमेंडमेंट्स हैं उन्हें कबूल करने की जरूरत नहीं है। उसमें पहली अमेंडमेंट यह है कि लाअिन्स ३, ४ और ५ को निकाल दिया जाय। जो कवायद जेल में किये जाते हैं उन्हें यदि माना नहीं जाता है तो उन कवायद का कोअी मतलब नहीं रहता है, थ्रेटनिंग और अिनसल्टिंग लॅंग्वेज (Threatening and insulting language) जो रखा गया है उसे आप निकालना चाहते हैं यानी यदि कोअी कैदी चाहे तो सुपरिटेण्डेन्ट या दूसरे आफसरोंको डरा धमका भी सकेगा और फिर जेल में कुछ भी डिसिप्लिन नहीं रहेगा। इस लिये थ्रेटनिंग या अिनसल्टिंग लॅंग्वेज का क्लॉज रखाना जरूरी है। उसी तरह लाअीन्स ४ और ५ भी रखा जाना जरूरी है इस लिये मैं इसे कबूल नहीं कर सकता हूं।

असके बाद लाअीन सात और आठ के निकालने के बारे में अमेंडमेंट्स हैं। उन्हें भी कबूल नहीं किया जा सकता है। जैसा की मैंने पहले कहा कि थ्रेटनिंग लॅंग्वेज या अिनसल्टिंग लॅंग्वेजों को निकालने की अमेंडमेंट लाअी गयी है यदि अपोजिशन मेंबर्स का अगर यह मतलब है कि उन्हें इस तरह की लॅंग्वेज अिस्तेमाल करने की अिजाजत दीजाय तो इसे कोअी भी कबूल नहीं कर सकता। जो लोग जेल में अिडीसेंट लॅंग्वेज अिस्तेमाल करते हैं उनके लिये तो जेल में सजा रहना जरूरी है। जेल में सब अेक ही तरह के लोग आते हैं अैसी बात नहीं है। जेल में जो लोग आते हैं वे डिकोरम (Decorum) के नहीं आते हैं। जेल में अैसे भी लोग आते हैं जो हाउंडेड क्रिमिनल होते हैं और जरायम के आदि होते हैं। उनको अिनसल्टिंग लॅंग्वेज और थ्रेटनिंग लॅंग्वेज अिस्तेमाल करने की आदत रहती है। और इस तरह की अिडिसेंट लॅंग्वेज जिन की सुनने की आदत नहीं होती अैसे कैदियों को बड़ी तकलीफ होती है। और जेल का डिसिप्लिन कायम नहीं रहता है। इसलिये जो भी अमेंडमेंट्स हैं उन्हें कबूल नहीं किया जा सकता।

असके बाद लाअीन्स ९, १३ और १४ के निकालने के बारे में अमेंडमेंट पेश की गयी है। ९ में यह कहा गया है कि जिस कैदी को रिगर्स अिप्रिजनमेंट हो और जियादा काम करने की सजा उसको दी

गयी हो तो अगर वह काम बराबर नहीं करता है तो ऐसी हालत में उसे प्रिजन अफेन्सेस के तहत लाना जरूरी है। अगर ऐसा न किया जाय तो रिगरस डिप्रिजनमेंट का मकसद ही फौत हो जाता है। कभी इस तरह की सजा अदालतों से ही दी जाती है। और कभी कभी जेल में भी दी जाती है। अगर वह इस काम को बराबर नहीं करता और निगलेक्ट करने की कोशिश करता है और ऐसी हालत में यदि ऐसी सजा देने का प्रोविजन न हो तो रिगरस डिप्रिजनमेंट का मकसद ही फौत होता है। इस लिये इस अमेंडमेंट को भी मंजूर नहीं किया जा सकता। उसी तरह १४ को भी मंजूर है। नहीं किया जा सकता है।

असके बाद ११, १२, १८, १९ लाजीन्स को निकालने के बारे में अमेंडमेंट है। और ६ और ७ को भी ओमिट करने के लिये कहा गया है। सात की जो अमेंडमेंट है उसमें फिटर्स या हॅन्ड कप्स या ब्रास को रिमुव्ह करने के बारे में है। ऐसी भी लोग जेल में आते हैं जो कि जेल की बेडिया भी काटकर भाग जाते हैं। ऐसे भी लोग होते हैं जोकि आडा डंडा भी तोड़कर भाग जाते हैं। अगर यह अपने मन से जिन्हें निकालें तो उसके लिये भी कोअी सजा न हो, यह तो कभी नहीं हो सकता है इस लिये यह अमेंडमेंट भी मंजूर नहीं की जा सकती। इस तरह के लोग जियादा तर हार्डेन्ड क्रिमिनल्स होते हैं अन्के लिये इसे रखना बहुत जरूरी है।

हिस्ट्री टिकट के बारे में भी अक अमेंडमेंट है। उसमें हिस्ट्री टिकट यदि कोअी कैदी खराब करता है तो उसे प्रिजिन्स अफेन्स के तहत लाया जाता है। उसे न लाया जाय, इस तरह से अमेंडमेंट है। हिस्ट्री टिकट यह अक बहुत महत्व का डाक्युमेंट होता है। यह अक रेकार्ड यानी डाक्युमेंट होता उसकी हिफाजत करनी जरूरी है। कानून ताजिरात के लिहाज से भी इसे रखना लाजमी होता है इस लिये मैं अमेंडमेंट्स को कबूल नहीं कर सकता हूं।

इस लिये मैं २३ और २४ के लिहाज से जो अमेंडमेंट्स दिये गये हैं अन्हें तो कबूल करता हूं लेकिन इसके अलावा बाकी सब अमेंडमेंट्स नाकबूल हैं।

Mr. Speaker: The question is:

“Omit lines 3, 4 and 5.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is:

“Omit lines 7 and 8.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is:

“Omit lines 9, 13 and 14.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is :

“Omit lines 11, 12, 18 and 19.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is :

“Omit line 22”.

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The other two amendments were accepted by the Member-in-charge of the Bill. The question is :

“That clause 45, as amended, stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 45, as amended, was added to the Bill.

Clause 46

Shri K. Venkatrama Rao: I beg to move :

“That for lines 1 to 3, substitute: ‘46. The offences under section 45 may be punished by.’”

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri B. D. Deshmukh: I beg to move :

“That in line 10, after ‘Government’, add : with the consent of medical officer’.”

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri A. Ramchandra Reddy: I beg to move :

“(a) Omit lines 17 to 24.”

(b) That in line 26, for ‘three months’, substitute ‘one week’.”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri Devisingh Chauhan (Ausa) : I beg to move :

“(a) That in line 26, for ‘three’ substitute ‘two’.

(b) In line 41, for ‘fourteen’ substitute ‘ten.’”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri Sham Rao Naik (Hingoli-General) : I beg to move :

“Omit lines 50 and 51.”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri Sham Rao Naik : I beg to move :

“That in line 54, omit ‘or to whipping’.”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri L. K. Shroff : I beg to move :

“That after line 26, add :

‘Provided that while executing the punishment of separate confinement no prisoner shall be kept in separate confinement continuously for more than a week at one time and the interval between one period of confinement and the next will be at least a week.’”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri L. K. Shroff : I beg to move :

“Omit lines 33 to 39.”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri S. L. Newaseker : I beg to move :

“That in line 31, between ‘exercise’ and ‘per’, insert, ‘in the open air.’”

Mr. Speaker : Amendment moved.

Shri Ram Rao Aurgaonkar (Georai): I beg to move:

“Omit lines 40 to 49”.

Mr. Speaker: Amendment moved.

Shri A. Ramchandra Reddy: I beg to move:

“That in line 41, for ‘fourteen’ substitute ‘three’.

Mr. Speaker: Amendment moved.

* شری کے - وینکٹ رام راؤ:- مسٹر اسپیکر سر - دفعہ ۴۰ میں جرائم کا تعین کیا گیا ہے اور دفعہ ۴۶ میں سزائیں مقرر کی گئی ہیں - سزائیں صادر کرنے میں موجودہ طریقہ کار میں تبدیلی کی ضرورت ہے - اس تبدیلی کی ضرورت کو اس جانب کے آئریبل ممبرس نے بھی محسوس فرمایا ہے - موجودہ عمل یہ ہے کہ قیدی کے خلاف شکایت کرنے والا خود سپرنٹنڈنٹ ہوتا ہے اور وہی خود اس شکایت کے بارے میں سزا صادر کرتا ہے - یعنی وہی شاکی اور وہی جج - ایسا عمل نہ ہونا چاہئے - قانون اور اصول کے لحاظ سے یہ عمل کسی طرح بھی درست نہیں - مینڈمنٹ کے ذریعہ سزاؤں کو دو حصوں میں تقسیم کیا ہے - میں مانتا ہوں کہ جیل کے اندر ڈسپلن قائم رہنا چاہئے اور سپرنٹنڈنٹ کو اختیارات رہنے چاہئیں - لیکن یہاں جو وسیع تر اختیارات دیئے گئے ہیں میں ان کی مخالفت کرتا ہوں - دفعہ ۴۰ میں جرائم کا جس طرح تعین کیا گیا ہے اس کے لحاظ سے کسی شخص کے کسی بھی عمل پر ایکشن (Action) لیا جاسکتا ہے - اٹھسے بیٹھسے کچھ بھی کرے تو وہ رم بنایا جاسکتا ہے - اس طرح جیل کی چار دیواری میں کوئی شخص ایک منٹ بھی نہیں رہ سکے گا - کسی نہ کسی طریقہ سے کسی بھی عمل کو جرم بنادیا جائے گا - یہ تعریفات کوئی معین معنی رکھنے والے نہیں ہیں - اور پھر اس کے کوئی نظائر بھی نہیں ہوتے - کوئی مقررہ اصول نہیں ہیں - اور کورٹ کے ذریعہ تو ان باتوں کی چھان بین کی نوبت نہیں آتی - اس وجہ سے میں نے یہاں اس کو دو حصوں میں تقسیم کیا ہے جیل میں منیم ڈسپلن قائم رکھنے کے لئے بعض اختیارات دیئے جائیں - اور کچھ جرائم کی سزا کا اختیار مجسٹریٹ کے حوالہ کیا جائے - اس پر کانسی کونسل (Consequential) منڈمنٹ بھی لایا گیا ہے - اگر کسی واقعہ کو خود سپرنٹنڈنٹ نے دیکھا ہے وہ خود گواہ ہے تو یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ اس کے بعد کیا ہوگا - گو بعد کے دفعات میں یہ کہا گیا ہے کہ پریزنر (Prisoner) کا جواب لیا جائے گا لیکن یہاں سزا کے طور پر کسی کو بھی سالیٹری کنفائمنٹ یا سخت سے سخت سزا دی جاتی ہے - ایسی صورتوں میں تحقیقات کو بھی سخت سے سخت رکھنا چاہئے - محض سپرنٹنڈنٹ کو جملہ اختیارات دیدینے سے انصاف متاثر ہوگا - اور انتقامی جذبہ کے تحت سخت سے سخت سزائیں دی جائیں گی - اور دفعہ کو موجودہ صورت میں رکھنے کی وجہ سے پریسپلس آف جسٹس کے خلاف عمل

تصور ہوگا۔ بعد کے دفعات میں یہ ہے کہ کونسی سزائیں سپرنٹنڈنٹ دے سکتا ہے اور کونسی سزائیں مجسٹریٹ صادر کر سکتا ہے۔ یہ ایک اصولی انڈسٹنٹ ہے۔ میں امید کرتا ہوں کہ موور آف دی بل اس کو قبول کریں گے۔

* شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ:- مسٹر اسپیکر سر۔ کلار ۶۶ کے ذریعہ کسی قیدی کو چینج آف لیبر (Change of Labour) کی سخت سے سخت سزا دی جاتی ہے اگر کسی پرنز کو کلار ۶۶ کی خلاف ورزی میں اړکسم آر سیویر فارم (Irksome or Severe form) کی سزائیں دینا چاہتے ہیں تو اسکی جسمانی حالت دیکھنا چاہئے۔ یہاں یہ ہے کہ

'change of labour to some more irksome or severe form (for such period as may be prescribed by rules made by the Government).'

میں چاہتا ہوں کہ ایسی سزائیں صادر کرنے سے پہلے ڈاکٹر سے مشورہ حاصل کیا جائے کہ آیا وہ قیدی ایسی سزا برداشت کرنے کے قابل ہے یا نہیں۔ میری ترمیم کے ساتھ یہ کلانز اس طرح ہو جاتا ہے۔

'change of labour to some more irksome or severe form (for such period as may be prescribed by rules made by the Government with the consent of the Medical Officer)'.

یہ چند الفاظ میں اسکے بعد رکھنا چاہتا ہوں۔ ممکن ہے آج بھی اس قسم کا عمل ہو لیکن اس کو قانون میں صاف طور پر واضح کیا جانا چاہئے۔

శ్రీ కె. వెంకయ్య :—స్పీకర్ సర్, క్లాజ్ రైల్వే లో టైను 33 నుంచి 36 వరకు తొలగించాలని చెప్పి, నా అమెండుమెంటు. ఎందుకంటే జైలులో వున్న ఖైదీ, సీరం చేశాడని చెప్పి అతడిని ప్రత్యేకంగా సాటిలరీ నెట్ లో బంధించడం జరుగుతోంది. అంతటిలో ఆగకుండా ఆహారములో కూడా మార్పు చేయటానికి పూనుకొంటున్నారు. జైల్లో ఇప్పుడు పెడుతున్న ఆహారం న్యాయంగా ఖైదీలకు సరిపోతుందా, లేదా, అని తెలుసుకోవాలంటే, జైల్కుకు పెట్టినటువంటి చాలామంది పెద్దమనుష్యులను విచారించగా తెలిసినదేమంటే, చాలావరకు, వారికి ఇచ్చిన ఆహారం చాలాం లేదని అనటం సరిపోవటువంటి ఆహారం ఇస్తూ, సీరం చేశాడని చెప్పి వంటరీ నెట్ లో నిర్బంధించడమే కాకుండా అతనికి చాలని ఆహారంలో తిరిగి తగ్గించటం అంటే అతనికి ఇచ్చే రొట్టెలను తగ్గించటమో లేదా గంజ్ పోయటమో జరుగుతోందన్నమాట.

అసలు జైల్లో వెట్టటమే ఒక శిక్ష. అయితే ఈ జైల్లో ఇంకో జైల్ అని అనుకోవాలి వస్తుంది. చదువులో చదువులు పెద్ద చదువులు చదువుకొన్న పెద్ద మనుష్యులే ఇటువంటి తాపనం చేస్తున్నారని చెప్పవలసి వున్నది. అసలే ఒక సేరం చేశాడని చెప్పి జైలులో పెడతారు. అందులో ఇంకా సేరం చేశాడని చెప్పి నెల్స్ లో బంధించడమే గాక, తిరిగి పొట్టమాడ్చటమూ కూడ చేయాలని చెబుతున్నారు. కొంతకాలం అట్లా పొట్ట మాడిస్తే, ఆ భైదీకి స్వాధ్యాయ పరి

شری اے۔ راجندر ریڈی :- مسٹر اسمیکر سر۔ اس بل کے دفعہ ۳۴ میں تین ترمیمات پیش کئے گئے ہیں۔ پہلی ترمیم میں لائن (۱ تا ۲) کا جو جملہ ہے اسکو غیر ضروری سمجھنا ہوں۔ میں نے اس بل کا بغور مطالعہ کیا اور یہ محسوس کرتا ہوں کہ آنریبل ممبر انچارج آف دی بل نے لائن (۱ تا ۲) کو بغیر کما یا سمی کولن کو تبدیل کئے سنٹرل پوزنرس ایکٹ کو سامنے رکھ کر سسکی کا پیار کی ہے۔ ہم اسکو مان لیں تو بہت مشکل پیش آئیگی۔ پہلی ترمیم کے ذریعہ میں نے خواہش کی ہے کہ لائن ۲ تا ۳ کو حذف کیا جائے۔ اس میں صاف طور پر رکنا گیا ہے کہ جیل کے قواعد کی خلاف ورزی کی صورت میں قیدی کو سخت سے سخت سزا دی جا سکے گی۔ کوئی قیدی جیل کے قواعد کی خلاف ورزی کرنے کو جیل کے افسر اسکو تین مہینے تک ٹاٹ پتری پہنا سکتے ہیں اور کیمبل سے تیار کردہ کپڑے پہنا سکتے ہیں۔ موسم سرما میں اگر کوئی سردی کی تاب نہ لا کر کیمبل استعمال کرنا چاہے بھی تو نہیں کر سکتا ناوقتیکہ اسکے نیچے کوٹ روٹ کا کپڑا نہ جوڑا جائے۔ جنرل ڈسکشن میں آنریبل موور نے وعدہ کیا تھا کہ وہ ان واجبی ترمیمات پر غور کریں گے اور ایسی چیزیں نکال دیں گے لیکن اب ان ترمیمات کو قبول نہیں کیا جا رہا ہے جو نہایت واجبی ہیں۔ دوسری چیز یہ کہ عہدہ داران جیل کسی قیدی کو ہتکڑیاں اور پیروں میں اڑڈنٹس بلا تعین مدت ڈال سکتے ہیں۔ یہ چیزیں ایسی ہیں کہ ہم انکو ایک لمحہ کے لئے بھی قبول نہیں کر سکتے۔ ان سزاؤں کے لئے کوئی مدت بھی مقرر نہیں کی گئی ہے۔ انسروں کی صوابدینہ ہر چھوڑ دیا گیا ہے۔ میں اپنے ذاتی تجربہ کی بناء پر کہہ سکتا ہوں گذشتہ دس سال میں میں ڈھائی سال جیل میں رہا ہوں اور دیکھ سال تک ہتکڑیاں اور اڑڈنٹس ڈالے گئے ہیں۔ آنریبل ممبر انچارج آف دی بل کہتے ہیں کہ خطرناک لوگوں کو ہی ڈالتے ہیں۔ لیکن کیا آنریبل موور بتائیں گے کہ اس طرف بیٹھے ہوئے ارکان خطرناک ہیں۔ اگر ایسا ہے تو میں کہوں گا کہ حکومت نے رجعت پسندانہ پالیسی اختیار کی ہے۔ ایسے لوگوں کو ہتکڑیاں ڈالنے کے لئے آنریبل موور نے بد نیتی سے اس بل میں

اشری مرلیدھر راؤ کلمتی کر (بھالکی) :- کیا ہدیتی کا لفظ پاپا رلیمنٹری
ہے۔ کیا کسی کی نیت پر شاؤس میں حملہ کیا جا سکتا ہے۔

شری اے۔ راجندر ریڈی :- آنریبل ممبر اس وقت طیش میں آ رہے ہیں لیکن رضاکار دور میں وہ بھی لٹکنی کی سزا پاچکے ہیں۔ اوس زمانے میں اون لوگوں نے بھی بڑے بڑے نعرے بلند کئے تھے لیکن آج ٹریڈری بنچ بر بیٹھکر اون سب باتوں کو بھول گئے ہیں اور ہم جو کچھ کہتے ہیں اوس کے متعلق یہ کہہ رہے ہیں کہ یہ صحیح نہیں ہے۔ اس طرح رجعت پسند اور فسطائی ذہنیت کو اس بل میں رکھکر آنریبل ممبر انچارج منظور کرانا چاہتے ہیں۔ لیکن اس طرف کے آنریبل ممبرس ایک لمحہ کے لئے بھی اسکو قبول نہیں کر سکتے۔

میری دوسری ترمیم یہ ہے کہ سب کلاز ۸ کی رو سے مشتم جیل کو تین ہفتہ کی بجائے زیادہ سے زیادہ ایک ہفتہ سپریٹ سیل (Separate cell) میں رکھنے کا اختیار دیا جانا چاہئے۔ کسی قیدی کو اگر غدار سمجھتے ہیں جسکی وجہ سے بغاوت کے پیدا ہونے کا امکان ہو تو ایک ہفتہ سے زیادہ سپریٹ سیل میں نہیں رکھنا چاہئے کنفائنمنٹ (Confinement) میں ۱۴ دن تک رکھ سکتے ہیں لیکن میری ترمیم یہ ہے کہ زیادہ سے زیادہ تین دن تک رکھنا چاہئے۔ ڈبل گنجی کے متعلق آنریبل ممبر نے کہا کہ وہ بہت اچھی ہے۔ میں ڈبل گنجی اور سنگل گنجی میں ڈھائی سال زندگی گزار چکا ہوں۔ وہاں کیا سہولت ہے۔ پائخانہ پیشاب وہیں کرنا پڑتا ہے۔ کھانا وہیں کھانا پڑتا ہے۔ اگر آپکو یقین نہیں ہے تو سنٹر جیل جاکر معائنہ کیجئے۔ میں دو تین مہینے پہلے بھی معائنہ کے لئے سنٹرل جیل گیا ہوں۔ وہاں اب بھی کسی قسم کی تبدیلی نہیں ہوئی ہے۔ اس ایوان کے کئی ارکان دو تین سال تک جیل کی زندگی گزار کر ٹی بی (T. B.) میں مبتلا ہو گئے ہیں۔ اس ایوان کے آنریبل ممبر شری دھرما بھکشم چہ، مہینے تک ٹی بی ہاسپٹل میں پڑے رہے ہیں۔ اسلئے میں نے یہ تیسرا اسٹنڈنٹ پیش کیا ہے۔ بجائے ۱۴ دن کے عہدہ داران جیل اگر اسکو خطرناک سمجھتے ہیں تو تین دن تک سیلس کنفائنمنٹ (Cells confinement) میں رکھ سکتے ہیں۔ چونکہ میری تینوں ترمیمات واجبی ہیں اس لئے آنریبل ممبر انچارج آف دی ہل ان کو قبول کر لیں تو مناسب ہوگا۔

The House then adjourned for recess till Half Past Five of the Clock.

The House re-assembled after recess at Half Past Five of the Clock.

[Mr. Deputy Speaker in the Chair]

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Speaker, Sir. I have moved three amendments to this clause. The first pertains to reducing the period of three months to two months. In the case of separate confinement the punishment has been fixed

at three months and I want that it should be reduced to two months. In the case of Cellular Confinement, the period prescribed is fourteen days. My suggestion is that it should be only ten days. Thirdly, I have proposed the deletion of item 12, i.e., punishment by whipping.

Regarding the first two amendments, I need only submit that the periods of punishment are a bit longer I have proposed that their duration should be reduced. A separate confinement lasting three months is too much and therefore to minimise the rigour of the punishment, I have suggested that it should be only two months. Similarly Cellular Confinement for a continuous period of fourteen days is too much and my suggestion is that it should be only ten days.

About the third amendment which is about whipping in the prisons, I have strong objections for incorporating this sort of punishment in the Prisons Act. All the offences which are committed within the four-walls of the prison are simply triable by the Superintendent of the Jail. We should not bring in the idea of trial that takes place in Judicial Courts. These are punishments given and executed by the jail authorities who are simply administrative officers. The conception of Judicial Enquiry can not be associated with these enquiries and their punishments.

Moreover, whipping in the jail is a barbarous and medieval conception of punishment. It should be completely given up in this twentieth century. In the Penal Code, a controversy is going on whether whipping should be altogether given up from all punishments. Here, in the prisons I propose that there should be no place for whipping. In the first instance the punishment which is given by the Superintendent, of course, with the confirmation of the Government, is simply on the advice of the administrative officers. There is no judicial officer as such. Simply the haughtiness or the unyielding nature of the prisoner may induce the officers to resort to these punishments, but that does not mean that a complete enquiry or investigation has been made and the authorities are within their bounds to resort to this sentence or punishment. That is not so. I, therefore, think that whipping should be excluded from the punishments under this Act.

Moreover modern trends in criminology also suggests that all attempts should be made to make the punishments

as reformatory as possible. There may be a school of thought which may support that punishment or a sentence should be deterrent, but that is being discarded and the theory of reformatory punishment is being more and more accepted. Apart from that it is very risky to give the administrative officers powers of whipping. In the prisons all attempts should be made to make the prisoner forget the criminal attitude or mentality, which he used to possess outside the prison and every effort should be made to see that the atmosphere in the prison is conducive for his reformation. Therefore, the approach of the jail authorities and the Government should be such as to give all possible help to the prisoners so that they may be reformed. Whipping is a deterrent punishment and as such we should not resort to it in the prison. Therefore, my submission is that when we are living in an age, which is taking education to prisoners, giving them more amenities and allowing them to live in a free atmosphere, it is I think, very difficult for this House to accept this provision of whipping the prisoners in the jails. I would therefore submit that the Member-in-charge of this bill would accept this amendment so that we may prove that we are progressing with the trends of the age.

Shri L. K. Shroff: There are four or five amendments standing in my name, but since there are other members to speak on some of them, I would like to confine myself to one of the amendments which is standing exclusively on my name. The amendment is :

After line 26 add : "Provided that while executing the punishment of separate confinement no prisoner shall be kept in separate confinement continuously for more than a week at one time and the interval between one period of confinement and the next will be atleast a week."

The purpose in moving this amendment is to lessen the rigours of punishment that are being meted out to the prisoners in the jails. It has been accepted on all hands that some of the punishments that are included here are rather obnoxious and therefore it should be our desire to minimise the rigours of these punishments. Separate confinement, Cellular Confinement and whipping are three of such punishments. When a prisoner is awarded separate confinement continuously for a period of not exceeding three months, there is an amendment to lessen it to two months. It is possible that it may have an adverse effect on the physical and mental health of the prisoner. Many members who spoke on this bill

at the time of first reading referred to this point elaborately and it is not necessary for me to repeat them again. They have said that it would have a very bad psychological effect and therefore it is necessary that separate confinement should be avoided. In order that the amendment that I moved may be acceptable to the hon. Member in-charge of this Bill, I have tried to make the amendment look simpler by saying that if separate punishment is awarded, let it be made less rigorous when it is being executed. My idea is to make a prisoner not feel the rigours of the punishment very much. So I have said that if separate punishment is awarded, while executing it, the jail officer should see to it that the prisoner is kept in separate confinement for about a week and then he is allowed to live the normal life of the prison for atleast another week and again be committed to separate confinement and so on in order that he may not feel the separation from other prisoners very much, which he should certainly feel, if he were to be kept away from them for the whole period of confinement. That is the purpose in bringing this amendment. I think the hon. Minister might not find it very difficult to accept this amendment. It only tries to humanise or lessen the rigours of the punishment. Of course, it is said here that separate confinement would be such that it would seclude the prisoner from communication with the other prisoners but he would not be prevented from seeing other prisoners. This makes it more unpalatable and disagreeable. Again it is said that a prisoner under separate confinement may be allowed to have his meals with one or two of his fellow-prisoners, but he should not have any communication with them. This adds to the unpleasantness. I would, therefore, suggest that this separate confinement should not extend to more than a week at a time in its execution. What I mean is: a superintendent may award separate confinement even for two months if he thinks it so necessary, but while executing it, the jail officer will see to it that at one time, the prisoner is not kept separately for more than a week at a time.

As regards the other amendments standing in my name, I think there are other members who are going to speak on them and I do not wish to add anything more.

* شری دھرما بھکشم :- میری ترمیم لائن (۵۱) کو نکال دینے کے بارے میں ہے جو وہیپنگ (Whipping) سے متعلق ہے ۔ ممکن ہے سزا تازیانہ کا نام بہت سہذب معلوم ہوتا ہو ۔ جن لوگوں نے جیل میں زندگی بسر نہیں کی شائد اون

کو اس سزا کا مزہ معلوم نہیں ہے۔ میں کہتا ہوں کہ اس سزا کا مظاہرہ جیل کی گیٹ میں ہی کیا جاتا ہے۔ تین پاؤں کا ایک اسٹینڈ جیل کی گیٹ میں کھڑا کیا جاتا ہے۔ اس کا نام لال گھوڑا یا ٹکٹی ہے۔ جیل میں داخل ہوتے وقت ہی اس کو انٹراڈیوس کر کے قیدیوں سے کہا جاتا ہے کہ اگر آپ جیل کی خلاف ورزی کرینگے تو اس پر چڑھا کر آپ کو سزا دی جائیگی۔ یہ سنٹرل جیل۔ اورنگ آباد جیل اور گلبرگہ جیل میں پہلی سیڑھی میں رکھا جاتا ہے۔ جب یہ سزا دیجاتی ہے تو تمام قیدی اسکو ماتمی دن سمجھتے ہیں۔ قیدیوں کو اس دن نکلنے نہیں دیا جاتا۔ وارڈس میں بند کر کے رکھتے ہیں اور باضابطہ کانسٹیبلز کو لاکر سپرنٹنڈنٹ کی موجودگی میں یا غیر موجودگی میں سزا دیجاتی ہے۔ جب قیدی کو بیت کی سزا دیجاتی ہے تو خون کی دھاریں دیوار تک جاتی ہیں۔ ہر چھڑی کے ساتھ خون کی دھار دیوار تک جاتی ہے۔ جیل میں جانے والوں کو یہ سزا ملی ہوگی۔ آنریبل منسٹر نے تو بہت مہذب الفاظ میں اسکو سزائے تازیانہ کا نام دیا ہے۔ لیکن سابقہ دور میں جب یہاں حکومت کے خلاف ستیاگرہ ہو رہی تھی۔ آریا سماج کا مومنٹ چل رہا تھا تو اس وقت بھی لیڈروں نے ”مسافات“، ”جھنڈا“، اور ”پیام“ اخباروں نے حکومت پر اس سزا کی اصلیت کو ظاہر کرتے ہوئے ادارے لکھے تھے۔ لیکن اب بھی منسٹر صاحب اس سخت سزا کو بحال رکھ رہے ہیں۔ میں اس تعلق سے اورنگ آباد کا ایک واقعہ ایوان کو سناتا چاہتا ہوں۔ وہاں پوجیا قیدی نے ایک غلطی کی۔ اس پر یہ الزام لگایا گیا کہ اسٹنٹ سپرنٹنڈنٹ کے گھر میں اسنے چوری کی۔ اگرچہ وہ چوری ثابت بھی نہیں ہوئی لیکن جیل میں تازیانہ کی سزا ہونے سے پہلے اسٹنٹ سپرنٹنڈنٹ صاحب کے گھر میں کھمبوں سے باندھ کر الیگل (Illegal) طریقے سے اسے خوب پیٹا گیا۔ اگرچہ اسے جیل سے باہر لانا ہی غلطی تھی لیکن باہر لایا گیا اور اسے خوب سزا دی گئی۔ اسکے علاوہ ڈاکٹر سے لکھوا کر اوس کا کھانا اور پانی بھی بند کرایا گیا۔ وہ پیاس سے پانی پانی تین تین وقت پکارتا ہے لیکن سپرنٹنڈنٹ صاحب جو وہاں موجود رہتے ہیں انکو رحم نہیں آتا۔ وہ تمام دن پانی کے لئے تڑپتے ہوئے جان دیدیتا ہے۔ میں یہ صحیح قصہ اس وقت کا بیان کر رہا ہوں جبکہ میں خود جیل میں تھا۔ اوس وقت ہم سیول پرنٹرس ہونے کے باوجود ڈریس نہیں دے رہے تھے اور ہم کمبل پہن کر اسٹرائک (Strike) کر رہے تھے۔ اس وقت میں نے یہ واقعہ اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے۔ وہ پانی پانی کھکر دم چھوڑ دیتا ہے لیکن اسکی اطلاع ڈاکٹر کو نہیں دیجاتی۔ اسٹنٹ سپرنٹنڈنٹ رہتے ہیں لیکن اسکا پوسٹ مارٹم تک نہیں کرایا جاتا۔ یہ واقعہ سنکر تمام قیدیوں نے تین دن تک سیول ڈس اوبیڈینس (Civil disobedience) کی حالت میں تمام جیل کو ایک کر دیا۔ اس وقت نہ پولیس جیل میں داخل ہوسکتی تھی اور نہ سپرنٹنڈنٹ صاحب جیل میں آسکتے تھے۔ حیدرآباد کے سارے اخبارات نے اس پر ادارے لکھے۔ انہوں نے لکھا کہ یہ ظالمانہ حرکت ہے۔ تازیانہ کی سزا کو ختم کرنا چاہئے۔ کانگریس لیڈرس جو اوس وقت سرحدی علاقہ میں تھے اور ہندو صاحب کی پریسیڈنٹ شپ میں نجو ایکشن کمیٹی

(Action Committee) () تھی اوسنے بھی ایک اسٹیٹمنٹ اخبار میں دیا تھا کہ یہ سزا دینے کا وحشیانہ طریقہ ہے ۔ اسکو فوراً ختم کرنا چاہئے ۔ لیکن آج وہی صاحب ہوم منسٹر ہیں اور ایک بل کے ذریعہ اسکو قانونی شکل دے رہے ہیں ۔ انکو معلوم ہونا چاہئے کہ یہ نا انصافی ہے یہ تو کانگریس گورنمنٹ کے آنے سے پہلے کا واقعہ ہے لیکن میں اورنگ آباد کا بھی ایک واقعہ ایوان کو سنانا چاہتا ہوں ۔ وہاں ایک سکچ (سردار جی) ہے ۔ انہیں مہتمم صاحب کو گالی گلوچ دینے کے سلسلہ میں سل میں ڈال دیا گیا ہے ۔ ایوان کو معلوم ہونا چاہئے کہ انکو جہاں نعشیں رکھتے ہیں وہاں ڈالا گیا ہے ۔ وہ انفلوئنزا اور بخار میں مبتلا ہیں لیکن انکو دوا بھی دیتے اور ساتھ ساتھ سزا بھی دیتے ہیں ۔ آپ بتلائیں کہ کیا ایسے وقت میں سزا دیجا سکتی ہے ۔ جب سردار جی کو سزا دیجا رہی تھی تو وہ تڑپ رہے تھے ۔ اور اسکی وجہ سے جو پروکیشن (Provocation) () وہاں ہوا گورنمنٹ اسکو کنٹرول نہیں کرسکی ۔ پوچھا کی سزا اور یہ سردار جی کی سزا اوس وقت کی دی ہوئی ہے جبکہ جیل کا ڈمنسٹریشن بھونانی ۔ شبلائی ۔ چیلانی گیلانی یہ جتنے بھی ہیں انکے ہاتھ میں آیا ہے ۔ انکے آنے کے بعد یہ سزائیں ہوئی ہیں ۔ سابقہ گورنمنٹ بھی یہ سزائیں نہیں دے سکتی تھی لیکن کانگریس حکومت ہونے کے باوجود بیڑ میں بھونانی صاحب اور اورنگ آباد میں شبلائی صاحب یہ سزائیں دیتے ہیں ۔ اسی زمانہ میں ورنگل میں ایک کلکٹر صاحب بھی آتے ہیں تو اسی قسم کی سزائیں دیجاتی ہیں ۔ وہ سزائیں جنکے خلاف ہم پہلے سے مظاہرہ کرتے آ رہے ہیں اب بھونانی صاحب کے وقت میں اور بندو صاحب (آنریبل منسٹر کنسرٹڈ ڈپارٹمنٹ) کی حکومت میں ایسی سخت سزائیں دینے کے لئے بل لایا گیا ہے ۔ اگر اس بل کو منظور کیا جائے تو میں نہیں سمجھتا کہ جیلوں میں اسکے خلاف کیا کیا نہ کیا جائیگا اور جیل سے باہر کے عوام اور پولیٹیکل پارٹیز کے لیڈرس اسپر کیا کچھ تنقید نہ کریں گے ۔ اسکو روکنے کے لئے ہر طرف سے زبردست پروٹسٹ (Protest) () کیا جائیگا ۔ اب وہ فیوڈل (Feudal) () زمانہ نہیں ہے جبکہ انسانیت کو بھلا کر سزائیں دیجاتی تھیں جیسا کہ اوس طرف کے ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ ٹوئیتھ سنچری (Twentieth Century) () میں ایسی سزا دینا ٹھیک نہیں ہے ۔ انکو صحیح مانتے ہوئے اس سزا کو ختم کرنا چاہئے دوسری جگہ بھی میرا ایسا ہی امٹمنٹ ہے ۔ میں اپیل کرتا ہوں کہ موور آف دی بل اس قسم کی سزاؤں کو نکال دیں ۔

श्री. गोविंदराव मोरे (कंधार-आम):—अध्यक्ष महोदय, जिस क्लॉज में कैदे तनाही और ताजियांत के बारेमें कहा गया है। रोमन कॅथॉलिक के जमाने में फॉर्गिंग की सजा गुलामों को दी जाती थी। और गुलामों को ही कैदे तनाहीमें रखा जाता था। चार पांच बेत भी लगाये जायें तो क्या हालत होती है यह आप सब लोग जानते ही हैं। यहां यह रखा गया है कि ३० बेत से ज्यादा न लगाये जायें। अगर किसी जिनसान को तीस बेत भी लगाये जाय तो वह किसी काम का नहीं रहता है। जमहूरी जमाने में जिस तरह से व्हिप्पिंग की सजा कतवी सही नहीं है। जिसलिये आज के हालात में जिस सजा को कतवी नहीं रखना चाहिये। व्हिप्पिंग की सजा जो दी जाती थी वह

گुلاموں کے جمانے میں دی جاتی تھی۔ آج تو ہم آزاد ہوتے ہیں۔ اس طرح کی سزا ہم نہیں دے سکتے۔ آج ملک کا ہر باشندہ آزاد ہے۔ اس طرح کی سزا کبھی نہیں دی جا سکتی ہے۔ آپ اُنہی گلام ہی سمجھتے ہیں تو اलग بات ہے۔ اس لیے میں مینسٹر صاحب سے پُراثرنا کرتا ہوں کہ ان سزاؤں کو بالکل جُروت نہی ہے اس لیے اسے اُکدَم نکال دینا چاہیے۔

* شری ایس۔ ایل۔ نواسیکر :- دفعہ ۴۶ کے ضن ۸ میں جو توضیح دی گئی ہے اس میں میں نے ایک ترمیم پیش کی ہے۔ وہ ترمیم یہ ہے کہ 'ان اوپن ایر' (In open air) یعنی "کھلی ہوا میں"، کے الفاظ شریک کئے جائیں۔ وہ اس وجہ سے کہ جس قیدی کو سزا دی جاتی ہے وہ کسی سے بات نہ کرے اور اس کو الگ جگہ پر رکھا جاتا ہے تو اس کی صحت پر بہت برا اثر پڑنے کا اندیشہ رہتا ہے۔ کسی شخص کو کھانا نہ ملے تو وہ بھوکا رہ سکتا ہے۔ کسی کو نیند نہ آئے تو وہ جاگتا رہ سکتا ہے لیکن کسی کو بات نہ کرنے دیا جائے تو یہ ایک سخت سزا ہوگی۔ اگر ہم دن بھر مکان میں رہتے ہیں تو کم از کم شام میں ایک آدھ گھنٹے کے لئے مکان سے باہر نکلنا ہمارے لئے ضروری ہو جاتا ہے اس وجہ سے کہ اس سے ہمیں تازگی حاصل ہوتی ہے اور جی بہل جاتا ہے۔ اس لحاظ سے قیدی کو جسے سل میں رکھا جائے گا اور جس سے ایک گھنٹہ اکسرسائز (Exercise) لی جائے گی تو اسے بھی کھلی ہوا میں لیجا کر گھومنا چاہئے اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ "کھلی ہوا میں"، کے الفاظ کا اضافہ کیا جائے تو مناسب ہوگا۔ میں امید کرتا ہوں کہ محرک اس ترمیم کو قبول کریں گے۔

شری اے۔ گرو ریڈی :- مسٹر اسپیکر سر۔ میں اس پورے دفعہ کی مخالفت کرتا ہوں۔ جیسا کہ ابھی ایک آنریبل ممبر نے فرمایا اس زمانہ میں سزا دیکر قیدیوں کو سزا ہارنے کی جو تھیوری (Theory) ہے وہ غلط ثابت ہو چکی ہے۔ ایک زمانہ میں یہ سمجھا جاتا تھا کہ جیل کو سخت سے سخت مقام بنایا جائے تاکہ اس میں کوئی نہ آئے۔ لیکن ہمارے سامنے دو ہزار سال کی تاریخ ہے وہ فیوڈل زمانہ تھا جس میں کہ ڈنجنس (Dungeons) ہوا کرتے تھے اور جن میں قیدیوں کو سخت سے سخت سزا دی جاتی تھی لیکن اب ایسا نہیں ہو سکتا۔ اس کی وجہ کیا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ سزا دیکر مجرمین کو درست کرنے کی تھیوری نا کام ثابت ہو چکی ہے۔ میں نے انسائیکلو پیڈیا برٹانیکا (Encyclopedia Britannica) میں یہ پڑھا ہے کہ جیلوں کے خلاف لوگ آواز اٹھائے اور جیلوں کی حالت کو درست کیا گیا ہے لیکن جیلوں میں سختیاں پیدا کرنے سے کرائمز (Crimes) میں کمی نہیں ہوئی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ جیل میں جو لوگ آتے ہیں ان میں دو قسم کے آدمی ہوتے ہیں۔ پہلی قسم کے آدمی وہ ہوتے ہیں۔ جو اپنے ماحول سے مجبور ہو کر کرائمز کرتے ہیں اور دوسری قسم ان لوگوں کی ہے جو نافذ الوقت قانون کے خلاف آواز اٹھاتے ہیں۔ اس کی خلاف ورزی کرتے ہیں اور انہیں جیل بھیجا جاتا ہے۔ اس حالت کے لحاظ سے جیل میں جو سزا دینے کا طریقہ ہے وہ غلط ہے۔ آج جو تھیوری ہے وہ یہی ہے کہ جیل

بھی ایک قسم کے اسکولس ہیں۔ ایسے اسکولس جن میں کہ بچوں کو پڑھایا جاتا ہے۔ خوش قسمتی ہے کہ آنریبل منسٹر جنہوں نے بل لایا ہے وہ اسکول میں نہیں ہیں۔ اگر وہ وہاں ہوتے تو بید کی سزا کو وہ جائز سمجھتے۔ غرض جیل میں جو لوگ آتے ہیں انہیں جیل میں لایا جا کر اپنی غلطی کو ریالائز (Realise) کرایا جاتا ہے۔ اس لحاظ سے پنشنمنٹ (Punishment) کا جو طریقہ ہے وہ اس موجودہ تھیوری کے خلاف پڑتا ہے۔ رومنس نے جیل کی جو تعریف کی تھی وہ یہ ہے

“Jails are places for safe custody of prisoners and not places of punishment.”

دو ہزار سال پہلے لوگ یہ سمجھتے تھے کہ یہ تعریف غلط ہے لیکن اب پھر اتنا عرصہ گزرنے کے بعد یہ ماننے لگے ہیں کہ جیل ایک سیف کسٹڈی (Safe Custody) کا مقام ہے وہاں پنشنمنٹ نہ دی جانی چاہئے۔ اس سے میرا مطلب یہ ہے کہ جیل میں سزا دینے سے کرائمس میں نہ تو کمی ہوتی ہے اور نہ قیدیوں کو سدھارا جا سکتا ہے۔ ان سے ہارڈ لیبر لینے سے کوئی فائدہ نہیں ہو سکتا۔ محض سزا دینے سے کسی کے مائنڈ (Mind) کو بدلا نہیں جا سکتا۔ مجھے اولاً تعجب اس بات پر ہو رہا ہے کہ آنریبل منسٹر اس سزا کے طریقہ کو یہاں پر کس طرح رکھ سکتے ہیں۔ یہ تو ہیومیائیٹی (Humanity) کے لئے خود ایک طرح کی انسولٹ (Insult) ہے۔ مائنڈ کو درست کرنے کی بجائے اس سے اور زیادہ خرابیاں پیدا ہو جاتی ہیں اس پر غور کرنا چاہئے تھا۔ اس میں ایک پراویژن یہ رکھا گیا ہے۔

Substitution of gunny bags.

جو قیدی کپڑے نہیں پہننا چاہتے ہیں ان کو کمبل پہنانے کے لئے کہا جا رہا ہے۔ گنی بیاگس کے کلوٹھس پہنا کر نہ صرف انسولٹ کرنا ہے بلکہ اس سے ٹارچر (Torture) کرنا بھی مقصد ہے۔ آپ اس کو کس طرح جائز سمجھتے ہیں۔ اسی طرح ہینڈکنفس (Handcuffs) بھی ڈالے جاتے ہیں جن کا تجربہ ہم کو بھی ہے۔ یہ نہ کھانا کھاتے وقت نکالے جاتے ہیں اور نہ پاخانہ کو جاتے وقت نکالے جاتے ہیں۔ مائنڈ پر اس کا کتنا برا ری ایکشن (Re-action) ہوتا ہے آنریبل منسٹر اس کو خیال میں بھی نہیں لا سکتے۔ ان کے ساتھ تو سندھی آفیسرس ہیں جو بریٹشرس (Britishers) کے زمانہ میں لوگوں کو سزا دینے میں پرفکٹ (Perfect) ہوئے ہیں۔ وی۔ ڈی۔ دیشپانڈے۔ آروئلہ راجندرارائی اور مجھے بھی فٹرس (Fetters) لگائے گئے ہیں۔ اس کا سوائے انسولٹ کرنے کے اور کوئی مقصد نہ تھا ہم سب کو بار فٹرس (Bar fetters) لگائے گئے لیکن ان سے ہمارے ارادوں میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی بلکہ اس کے برخلاف ہم اپنے ارادوں میں اور مضبوط ہوئے اور ہم نے یہ کہا کہ جب تک اس سے عوام کو رہائی نہیں دلائیں گے دم نہیں لیں گے۔ یہ تو میں پولیٹیکل سائڈ (Political side) پر کہہ رہا ہوں۔

لیکن کریمینل سائنڈ (Criminal side) پر بھی اس سے بہت برے خیالات پیدا ہوتے ہیں ۔

اسی طرح وہیپنگ کے لئے بھی اوس طرف کے بہت سے آئریبل ممبرس نے اپنے خیالات کا اظہار کیا ہے ۔ کیا گورنمنٹ کو یہ بھی یاد نہ رہا کہ ہمارے بیس سال کے مومنٹ میں بنگال وغیرہ میں انگریزوں کے زمانہ میں بھی اس کو بری چیز سمجھا گیا ۔ کیا مسٹر صاحب کو اس سزا کے اندراج کے وقت کچھ خیال نہ آیا اور اس کو ادھر اور ادھر سے لا کر شامل کرنا پڑا ۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ اب وہ کنونس (Convince) ہو چکے ہوں گے ۔ پنشنمنٹ کے ذریعہ لوگوں کو درست کرنے کی تھیوری سائنکالوجی (Psychology) کے اصول سے بہت بری ہے ۔ اس لئے میں چاہتا ہوں کہ اس پورے سیکشن کو اوٹ (Omit) کیا جائے ۔

* شری اناراون گن مکھی (افضل پور) :— مسٹر اسپیکر ۔ اس سیکشن کے بارے میں آج بحثیں ہو رہی ہیں اور اس سے پہلے بھی بحثیں ہوئیں ۔ اب سوال یہ ہے کہ آخر پنشنمنٹ دینے کا مقصد کیا ہے ۔ کیونکہ یوں تو جو قیدی جیل میں آتے ہیں وہ پنشنمنٹ کے لئے ہی آتے ہیں یا پھر ڈنٹشن (Detention) کے لئے انہیں وہاں بھیجا جاتا ہے ۔ بہر حال آج جو تصورات سزا کے سلسلہ میں ہیں وہ صرف یہ ہیں کہ جیل ریفارمس (Jail reforms) کرنے کی طرف گورنمنٹ کو راغب کیا جائے اور سوسائٹی یہ چاہتی ہے کہ اسکو آکوپیشنل تھراپی کا رنگ دیا جائے ۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس وقت آدمی کا دماغ ڈیول (Devil) بن جاتا ہے اور اگر اسکو کوئی کنسٹرکٹیو (Constructive) کام نہ دیا جائے تو ایسی صورت میں اپنے ساتھیوں یا جیل اتھارٹیز (Authorities) کے ساتھ وہ جھگڑے کرتے رہے گا ۔ اسلئے اسے کوئی نہ کوئی ایسے آکوپیشن (Occupation) میں لگانا چاہئے کہ اسے جیل کے ساتھ یا اپنے ساتھیوں کے ساتھ لڑنے کا موقع نہ ملے ۔ یہ چیز زیادہ تر سائنکالوجی پر منحصر ہوتی ہے ۔ انسان جب کرائم کرتا ہے تو اسکی بڑی وجہ اسکی سائنکالوجی میں تبدیلی ہوتی ہے ۔ کوئی بارن کریمینل (Born Criminal) نہیں ہوتا بلکہ ذریعہ میں اسکے مائنڈ (Mind) کی حالت ایسی ہوجاتی ہے کہ وہ سوسائٹی کے خلاف کوئی کرائم کر جاتا ہے ۔ اسلئے قانون کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ اسکو کرائم کی سزا دی جائے اور سوسائٹی سے باہر رکھا جائے تاوقتیکہ وہ درست نہ ہو جائے ۔ اگر آپ اسکو سوسائٹی میں لانے سے پہلے محنت لیکر صرف جسم مضبوط کرتے ہیں اور اسکی سائنکالوجی مضبوط نہیں کرتے جیسا کہ اوس طرف سے استدلال کیا جا رہا ہے اور جس سے میں متفق ہوں تو یہ مناسب بات نہوگی ۔ لیکن اگر قیدیوں کو سزا نہ دی جائے تو جیل خانے ۔ جیل خانے نہیں رہینگے اسلئے کچھ نہ کچھ سزا دی جانی چاہئے ۔

* شری اے ۔ گرواریڈی :— شرارت کرنے والے بچوں کو سدھارنے کے لئے آجکل مدارس میں بھی سزا نہیں دی جا رہی ہے ۔ اس طریقہ کو ناجائز سمجھا گیا ہے ۔

* शरी अना राऊगन म्कही :- ठ्हीक ह् - ज्बन्क हमीन अीसे जील आीसरस न्हे मलीन जो सान्कालोजीकल अस्ठडी करके कीडियों की अललह करके अनीन न्हे सद्धारनी अस वुत त्क तु वी हुना दशुार ह् - असुत्ने जील मीन क्कच् न्हे क्कच् पांनदयां हुनी ङाहूनी - लीकन ढ्हर ढ्ही सालीठरी سل या दीगर कुठी सज़ांनी ढ्हत ही शاذ व नادر वुवुतुन मीन दीङानी ङाहूनी - आकुपीशनल त्हरानी का जो अललह ढ्ताया गीा ह् व्हे मीन सम्ज्हाता हुन क्हे अीक ढ्हतरीन अललह ह् असुके त्हत अीसे आकुपीशनस जीलुन मीन रान्ज करुने ङाहूनी ङन से कीडी काम करके क्कच् रीटर्नस (Returns) हावल करीन और डीसप्लन ढ्ही सीक्क जाईन ताक़े सुसाठी मीन ङाने के ढ्द व्हे अीक पीसफल हीुमन बीन्ग (Peaceful human being) ताबत हुन - असुत्ने मीन सम्ज्हाता हुन क्हे अदहर के आर्नरील म्मर्स ने जो अन्डन्शनस देई हीन व्हे वाङी हीन - असुके सात्हे सात्हे मीन वी क्कना ङाहता हुन क्हे वीद की सज़ा वाक़ी वुवु ढ्हर ढ्हत अन हीुमन (Inhuman) ह् असुको ह्मारے मलक से वीानश (Banish) करना ङाहूने वी क्कना गीा ह् क्हे अस वल मीन अीसी सज़ा रक्की ही कीवुन गीी - म्कन ह् क्हे क्क वल की डुराफ्ठन्ग के वुत ङुक् हुगुी हु - वुल करुने वुत ढ्बुस ङलुपान अीसी हुती हीन और वी हाऊस असी लुने ह् क्हे वुरुरी अन्डन्शनस करुने और जो वुराब ङीज़ीन अस मीन आगुी हीन अन्को न्कालदया ङाई - असी वुरीक्क से मीन अरुस करुन्गा क्हे व्हां जो अीक हास वुस की सान्कालोजी लीकर आते हीन अन्को क्कच् न्हे क्कच् ढ्नशुन्त (Punishment) हुना ङाहूने लीकन ढ्नशुन्त के जो अन हीुमन वुरीक्क हीन अन्को सद्दुद करना ङाहूने - मीन सम्ज्हाता हुन क्हे जो वाङी अन्डन्शनस हीन अन्को आर्नरील मन्सुटर वुवल करुन्गे - अन्ना क्कहते हुई अीनी वुरीर व्त्त करता हुन -

श्री. श्रीनवासरव अखेलीकर :- सुपीकर सर, क्लज़ ४६ के तहत ढ्हुत सी तरमीमात आती हैं और असके वारे में अपोजीशन मॅबर्स और कुछ अलवर के मॅबर्स ने ढ्ही ढ्भाषण दीये हैं और तरमीमात वेश की हैं । हु सकता है क्क में कुछ तरमीमात को कवूल कखं और नतीजे के तौर वर क्लज़ ४६ की मौजूदा हालत न्हीं रहेगी । लेकन सवाल यह आता है क्क वीस तरीके से हम लुग सुोचने के आदी हु गये हैं वह अेक हमेशा का रुख हु गया है । अब ढ्ही मुल्क में जो हालांत हैं अुनके ललहाज से वान वक्त यह खीयाल हुता है क्क कान्स्टलटुशन के जरिये से ङखरत से ङ्यादा आजादी कल्लववक्त दी गयी ।

शरी अने - गुरवारीडु :- सात साल लुने के ढ्द ढ्ही वुल अ वुत क्कहीं तु कीसा हुगा ?

श्री. श्रीनवासरव अखेलीकर :- मैं दरखास्त कखंगा क्क आनरेबल मॅबर्स मेरी तकरीर को कामली अॅड वेशन्टली (Calmly and Patiently) सुनें तु अक्का हुगा । It does not reflect well to interfere always. मैं यह क्कना ङाहता हूं क्क असि क्कस्म की ढ्हुत सी वीजे होती हैं । दूसरे मुमालिक में आजादी आने के वान व्हे अखुतयार व्हां की रीखाया को बीस, ढ्चसीस या व्चास साल के वान दीये गये । हलदुस्तानियों की यह खुशकस्मती है क्क दो तीन साल के अंदर ही वल्कल अनवरी १९५० में ही व्हे सब अखुतयारांत यहां की रीखाया को दीये

गये । लेकिन उसके बाद जो हालात रूनुमा हुये हैं और हो रहे हैं उसके लिहाज से बाज वक्त यहां भी और दिल्ली के पार्लियामेंट में भी मॅबर्स को यह सोचना पड़ रहा है कि कान्स्टिट्यूशन में तरमीम लायी जाय । प्रेस को अंक आजादी दी गयी तो उसका जो अस्तेमाल हो रहा है वह जाहिर है और उसके बारे में आनरेबल मॅबर्स बहुत कुछ जानते हैं । मुझे उसके बारे में ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है । लेकिन जिसका मिसयूज (Misuse) हो रहा है या प्रापर यूज (Proper use) हो रहा है जिसको सब जानते हैं । आजादी दी गयी तो आजादी के नाम पर मुल्क में अंक किसम का गुंडाजिम (Gundaism) हो रहा है ऐसा महसूस किया जाता है कि उसको रोकने के लिये कुछ और स्टेप ली जाय । मैं आनरेबल मॅबर्स की तवज्जह सिर्फ इसी तरफ मबजूल कर रहा था कि वे बहुत आयडियलॉजिकल बनकर मुल्क की प्रेक्टिकल चीजों को और रिअेलिजम को न भूल जायें । और फिर कुछ दिनों बाद यह न कहें कि हम को फिर पोछे जाना चाहिये, या यह जरूरत से ज्यादा बात हो गयी । ऐसा कहने की नौबत न आयें । जो चीजें मैं कबूल कर रहा हूं वह क्लॉज ४६ के तहत बहुत अहम हैं । उसके बारे में दोनों तरफ से बहुत बहस हुयी है और मैं समझता हूं कि जिसको कबूल करना चाहिये । लेकिन चंद तरमीमात ऐसी हैं जिनको मैं कबूल नहीं कर सकता । लेकिन अितना बताना चाहता हूं कि मैं बहुत से अहम तरमीमात कबूल कर रहा हूं । जिन अहम तरमीमात को कबूल करने के बाद भी इस कानून पर जब कभी मजमूआ तौर पर बहस होगी तो आनरेबल मॅबर्स जरूर कहेंगे कि यह कानून १९०० के पहले का कानून है, अंग्रेजों के जमाने का और निजाम के जमाने का कानून है, वहशियाना कानून है । हर वक्त और हर अमेंडमेंट के बाद वही बातें कहीं जायेंगी । तो मेरे पास उसका जवाब नहीं है । अगर गवर्नमेंट को किसी अच्छी से अच्छी चीज के लिये भी अक्युज (Accuse) करने में कुछ माननीय सदस्यों को मजा आता है तो ऐसी कोयी तरमीम नहीं है कि जिसके जरिये मैं उनको मजा को छीन ले सकूं ।

شری بی۔ ڈی۔ - دیشمکہ :- آپ ایسا کہنے کا موقع مت دیجئے ۔

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—जिन आनरेबल मॅबर्स को महज टीका करने में ही मजा आता है उनको मैं कैसे रोक सकता हूं ?

अब मैं तरमीमात के बारे में सिलसिले से कहता हूं । पहली जो अमेंडमेंट है ('for items 1, 2 & 3) जिसको मैं कबूल नहीं करता । जेल्स हों या स्कूल्स हों, जैसा कि हमारे आनरेबल मॅबर्स बताते हैं, वहां भी सजा देनी पडती है । वहां भी हेडमास्टर या प्रिन्सिपाल को विद्यार्थियों को सजा देनी पडती है ।

شری اے۔ - گروا ریڈی :- پرانے ہیڈ ماسٹر سزا دیتے تھے اب زمانہ بدل گیا ۔

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—अितना जमाना बदलन के बाद भी स्कूल्स में डिसिप्लिन कायम रखने की जरूरत होती है । जिस लिहाज से जेल में डिसिप्लिन कायम रखने के लिये जेल सुपरिटेंडेंट को सजा देनी पडती है । मैं बार बार कह चुका हूं कि वहां पर जितने लोग आते हैं उनके बारे में समझा जाता है कि वे सब जेंद्री और सिविलाजिज्ड होते हैं या जेल में सिर्फ ऐसे ही लोग आते हैं और किसी लिहाज से वहां के लिये कानून होना चाहिये । लेकिन आनरेबल मॅबर्स को मालूम होना चाहिये कि वहां अंक ही वक्त नहीं बल्कि मुसलसिल कानून की खिलाफकर्षी करनेवाले लोग आते हैं, हैबीच्यूअल आफेंडर्स (Habitual offenders) वहां आते हैं । जैसे यहां

पर गवर्नमेंट की किसी अच्छीसे अच्छी चीज पर भी नुक्ताचीनी करने में कुछ लोगों को मजा आता है वैसे ही वहां पर मुसलसिल जरायम करने में मजा मालूम होनेवाले लोग आते हैं। ऐसे लोगों को सजा देकर वहां का डिसिप्लिन कायम रखने के लिये कुछ अख्तियार वहां के ओहदेदारों को होना चाहिये, नहीं तो वहां डिसिप्लिन कायम नहीं रह सकता। हर वक्त मैजिस्ट्रेट के पास चले जायें और मुकद्दमा महीनों से चलता जाये तो यह सही असूल नहीं होगा। जिस किसम की सजाओं मुकर्रर की गयी हैं उसमें बहुत सी ऐसी हैं जो मामूली लेबर, हार्ड लेबर या लॉस ऑफ प्रिविलेज के लिये हैं। क्या इसके लिये भी मैजिस्ट्रेट के पास जायें? इसलिये मैं पहली अमेंडमेंट कबूल नहीं करता।

इसके बाद दूसरी अमेंडमेंट है—

“In line 10, after : ‘Government’, add ‘with the consent of Medical Officer’.”

यह ऐसी है कि इसके बारे में खुद पहले से प्रोवीजन मौजूद है। सेक्शन ५१ को आप देखें तो मालूम होगा कि उससे यह तकलीफ दूर हो जाती है।

“No punishment . . . or of change of labour under section 46, clause (2), shall be executed until the prisoner to whom such punishment has been awarded has been examined by the Medical Officer”

यह वहां पर मौजूद है। अगर उसको पढ़ने की जहमत ही गवारा नहीं की जा सकती और हाबुस में सिर्फ तकरीरें करना ही मकसद है तो उसके लिये मैं क्या कर सकता हूं? यह प्रोवीजन वहां पर मौजूद है इसलिये इसको मैं कबूल नहीं कर सकता।

तीसरी अमेंडमेंट है (‘Omit lines 17 to 24’) मैं इसको कबूल करता हूं। जिसका जो दूसरा हिस्सा है कि (In line Twenty six for ‘three months’ substitute “One week”) इसको मैं यहां पर कबूल नहीं करता। लेकिन कोअी और अमेंडमेंट कबूल कर रहा हूं, इसलिये इसको कबूल नहीं करता। दूसरी जगह इसकी जो अमेंडमेंट है उसको मैं कबूल कर रहा हूं क्योंकि अंक ‘वीक’ (Week) बहुत कम है।

इसके बाद (In line twenty six for ‘three’ substitute ‘two’) इस तरमीम को मैं कबूल करता हूं।

इसके बाद (In line 41 for ‘fourteen’ substitute ‘ten’) इसको भी मैं कबूल कर लेता हूं।

इसके बाद (“Omit lines 50 and 51”) यह तरमीम है। इसके बारे में सब से ज्यादा जोर दिया जा रहा है इसलिये मैं इसको भी कबूल करता हूं।

अब जो तरमीम है कि (In line 54 omit ‘or to whipping’) यह अंक कान्सिक्वेन्शियल अमेंडमेंट (Consequential amendment) हो जाती है। जब ऊपर की अमेंडमेंट कबूल की गयी है तो इसको भी कबूल किया जाना चाहिये।

जिसके बाद 'After line 26' अंक Proviso पेश किया गया है और उसमें बयान किया गया है कि—

"Provided that while executing the punishment of separate confinement no prisoner shall be kept in separate confinement continuously for more than a week at one time and the interval between one period of confinement and the next will be at least a week."

जिसके बजाय अगर इस तरमीम के प्रस्तावक महोदय 'Week' के बदले 'Fortnight' कबूल करते हैं तो मैं जिसको भी कबूल कर लेता हूँ।

Shri L. K. Shroff : I accept the amendment to my amendment.

Shri Devisingh Chauhan : Does the hon. Minister want the word 'week' occurring at both the places in the amendment to be substituted by 'fortnight' ?

Shri Srinivasrao Ekhelikar : No. Only at one place. The amendment reads :

"After line 26, add :

'Provided that while executing the punishment of a separate confinement no prisoner shall be kept in separate confinement continuously for more than a week....'.

Instead of the words 'continuously for more than a week', it should be continuously for more than a fortnight'.

The rest of the amendment remains, the same, i.e.

'....at one time and the interval between one period of confinement and the next will be at least a week'.

شری اے۔ گرواریڈی :- کیا آپ اس کے متعلق ریزنس بتائیں گے کہ کیوں آپ فارٹ نائٹ (Fortnight) چاہتے ہیں اور کیوں ون ویک (One Week) رکھنا نہیں چاہتے ؟

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :- उसके बारे में जितनाही कहना चाहता हूँ कि सेपरेट कनफाइनमेंट में फरक है। सेपरेट कनफाइनमेंट में उस आदमी को एक बिल्डिंग के अलग हिस्से में रखा जाता है। सेपरेट कनफाइनमेंट में उसे खुले हवा में जाने की अजाजत रहती है। जिस लिये यदी समय फोर्ट नाइट(Fortnight)का भी रखा जाय तो उससे उसकी सेहत खराब होनी

का डर नहीं है। उसको खुली हवा में कम से कम एक हफ्ते में एक बार लाना चाहिये और घूमना चाहिये ऐसा है। जिस लिये इसे फॉर्ट नाइट रखा गया है। सिविल प्रोसिजर कोड में यह मुदत एक वीक (Week) की रखी गयी है और किसी कानून में दस दिन की रखी गयी हैं। और अगर हम १५ दिन की मुदत रखते हैं तो उसमें कंसीस्टन्सी रहेगी जिस लिये रखा गया है।

जिसके बाद ('Omit lines 33 to 39') यह अमेंडमेंट है। जो अमेंडमेंट है उसे मैं कबूल करता हूं। जिसके बाद ३१ लाइन में जो अमेंडमेंट है-

“ In line 31 : between ‘exercise’ and ‘per’ insert ‘in the open air’. उसे मैं कबूल करता हूं।

जिसके बाद ‘Omit line 40 to 49’ की जो अमेंडमेंट है उसे मैं कबूल नहीं करता हूं। सिविल प्रोसिजर कोड में यह सजा रखी गयी है। जिस लिये यहां भी रखी जा सकती है। सिविल कनफाइनमेंट की सजा वहां पर रखी गयी है तो यहां भी रखी जा सकती है। जिस लिये मैं इसे कबूल नहीं करता हूं।

‘In line 41, for fourteen ‘substitute three’ यह जो अमेंडमेंट है उसे मैं कबूल नहीं करता हूं। मैं एक चीज यहां पर मुद्द करना चाहता हूं गौकि उसे किसी ने मुद्द नहीं किया है लेकिन जब कि ३३ से ३९ तक लाइन को ओमिट करने के बारे में अमेंडमेंट मंजूर कर ली गयी है। तो यह एक पेनल डायट (Penaldiet) के बारे में कान्सेक्वेन्शियल अमेंडमेंट (Consequential amendment) है।

“penal diet as defined in clause (9) combined with cellular punishment.”

जिसमें भी कान्सेक्वेन्शियल अमेंडमेंट के तौर पर मैं कबूल करता हूं। It is a consequential amendment. क्लॉज ४६ का सबक्लॉज ११ कान्सेक्वेन्शियल होता है जिसलिये उसे निकालना होगा। अब बाकी कोजी अमेंडमेंट नहीं रही है।

जिस बिल का दफा ४६ एक अहम दफा है और मैं समझता हूं कि जिसमें जो अहम तरमीमात आजी हैं उन्हें मैंने कबूल भी कर लिया है। और अमीद करता हूं कि अब अपोजिशन की जानिब से वही पुरानी बातें न दोहोरायी जायेंगी कि यह कानून सन १९०० का ही है, या निजामी कानून है, या अंग्रेजों के जमाने का कानून है।

شری گرواریڈی :- اس امینڈمنٹ کے متعلق میں دو لفظ کہنا چاہتا ہوں -

Shri Devisingh Chauhan : There is no occasion now, when the reply has already been given. .

Shri Guruva Reddy : The member-in-charge of the bill has given an amendment to an amendment and I can speak about it.

Mr. Deputy Speaker : Yes, the amendment to amendment was moved by the Minister.

شری گرواریڈی : — بجائے ایک ایک کے فارٹ نائٹ سے متعلق جو امینڈمنٹ قبول کی گئی ہے میں اوس کے متعلق چند الفاظ کہنا چاہتا ہوں ۔

Shri Devisingh Chauhan : There is no occasion now for the hon. Member to discuss about a clause which has already been discussed.

Shri Guruva Reddy : This point has not been discussed.

Mr. Deputy Speaker : It has been discussed when amendment No. 7 came up for discussion. It cannot be discussed again. I will now put the amendment of Shri Ramchandra Reddy to vote part (a) has been accepted.

Shri Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw part (b) of my amendment.

Part (b) of the amendment was by leave of the house, withdrawn.

Mr. Deputy Speaker : Amendments No. 4, 5, and 6 have been accepted. Amendment No. 7 has been accepted with a change that the word 'week' in line three of the amendment be substituted by fortnight. Amendments Nos. 8 and 9 have also been accepted.

The question is :

“Omit lines 40 to 49.”

The motion was negatived.

Shri A. Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw my amendment.

The amendment was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 46, as amended, stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 46, as amended, was added to the Bill.

Clause 47

Shri Devisingh Chauhan : I beg to move :

“(a) That in marginal note after “section” add “46”

(b) in line 18 : for “(v)” substitute “(2)”

(c) in line 20 : for “(2)” substitute : “(3)”

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

Shri Devisingh Chauhan : The amendment moved by me is quite simple and only technical. The figure in the marginal note ‘46’ has been dropped by inadvertence. Sub-clauses (i) to (iv) of sub-clause (1) speak about combination of punishments where sub-clause (v) is quite different. That is not a combination of punishment and therefore should be treated as a separate sub-clause. I have suggested that it should be sub-clause (2) and consequently the existing sub-clause (2) should be numbered as (3). I think this amendment is quite reasonable and may be accepted.

In the previous clause discussed just now we have accepted an amendment to delete the punishment regarding penal diet. Therefore in this clause also in sub-clause (1), item No. (ii) should be deleted or somewhat modified consequentially.

Shri A. Guruva Reddy : So also in sub-clause (iv), the word ‘whipping’ will have to be eliminated or suitably modified.

Shri Srinivas Rao Ekkelikar : An amendment has been moved to that effect, Sir.

Mr. Deputy Speaker : The amendment has not been moved.

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—अध्यक्ष महोदय, क्लॉज ४७ के बारे में कोई दिक्कत नहीं है। यहां जो अमेंडमेंट्स जिस क्लॉज के लिये दिये गये हैं उनमें मैं कबूल करता हूं। उसी तरह सब क्लॉज ४ को डिलिट करने के बारे में जो अमेंडमेंट है उसे भी मैं कबूल करता हूं क्योंकि वह एक कॉन्सिक्वेन्शियल अमेंडमेंट है। जिसके बाद क्लॉज एक का सबसेक्शन २ डिलिट होगा। यह भी अमेंडमेंट मैं कबूल करता हूं।

Mr. Deputy Speaker : The hon. Deputy Minister wants to omit paras (ii) and (iv) of sub-clause (1).

Shri Srinivasrao Ekkhelikar : Yes.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 47, as amended, stand part of the Bill”.

The motion was adopted.

Clause 47, as amended, was added to the Bill.

Clause 48

Shri K. L. Narsimha Rao (Yellandu-General) : I beg to move :

“That in line 4 : for ‘one month’ substitute : ‘three days’.”

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

శ్రీ కె. యల్. నరసింహారావు :—స్పీకర్ సర్, ఇప్పుడు ర౬, ర౭ క్లాజులలో వచ్చిన అమెండు మెంట్సు ఏపైతే పున్నాయో వాటిని ఒప్పుకొంటూ మంత్రిగారు తమ దయార్థి హృదయాన్ని ప్రదర్శింప జేశారు. అంతేగాక తాము ఏదో పెద్ద ఘనకార్యం చేసినట్లు కూడా చెప్పుకొన్నారు కాని మనం ఒకటి స్పష్టంగా గమనించవలసి యున్నది. వారుమాత్రం తమ స్వబుద్ధితో యీ అమెండుమెండ్సును ఒప్పుకోవటం జరుగలేదు. ఇక్కడనుండి వచ్చిన వత్తిడి వల్ల, ప్రపంచం ఏమనుకొంటుందోననిచెప్పి, యీ అమెండుమెంట్సును ఒప్పుకొన్నారు. వారు ఈ అమెండు మెంట్సును ఒప్పుకోవలసి వచ్చింది. తాము ఏదో ఘనకార్యం చేసినట్లు చెప్పుకొంటున్నారా ఇప్పుడు నేను తీసుకువచ్చిన యీ అమెండుమెంట్సును కూడా అంగీకరిస్తేనే వారు తమ సహృద యాన్ని ప్రదర్శించినట్లువుతుంది. “నేను ఈ అమెండుమెంట్సును వత్తిడివల్ల అంగీకరించింది కాదు, నాలో మానవత్వం వుంది, నేను కూడా మానవత్వాన్ని రక్షించటం, మానవత్వాన్ని కాపాడటం అవసరం అనుకొంటాను, మానవత్వాన్ని రక్షించటానికి మానవత్వాన్ని కాపాడటానికి నేనూ ప్రయత్నిస్తున్నాను”—అని మంత్రిగారు చెప్పటానికి నా అమెండుమెంట్సును తప్పక అంగీ రించవలసియుంటుంది. నా అమెండుమెంట్సును అంగీకరించక “నేను ఘనకార్యము ఏదో చేస్తున్నాను” అని చెప్పి ప్రయోజనం లేదు. జైలులో వున్నవారిని మానవులుగా గుర్తించాలి వాళ్ళలో మానవత్వం సరిపజేయకుండా, వారిని ఉత్తమ మానవులుగా బయటకు వచ్చేట్లు పనికివచ్చే యీ సవరణలు ఏపైతే పున్నాయో వాటిని మంత్రిగారు అంగీకరించినట్లుగానే అటువంటిదే అయిన నా సవరణకూడ అంగీకరిస్తారని ఆశిస్తున్నాను.

Shri A. Guruva Reddy : Mr. Speaker, Sir. It is also a consequential amendment to this clause, i. e. ‘in the case of separate confinement for a period exceeding one month’ ... it will become ‘fortnight’

Mr. Deputy Speaker : How does the hon. Member explain it?

Shri. A. Guruva Reddy : Provided that while exact punishment... I am sorry, it is not correct.

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर:—अस क्लॉज ४८ के लिये अक अमेंडमेंट पेश की गयी है। क्लॉज ४८ में यह कहा गया है कि अक महीने की सजा दी जा सकती है और अउसे ज्यादा सजा यदि देनी है तो अउसे लिये पहले अिनस्पेक्टर जनरल से अिजाजत हासिल करनी चाहिये। अस लिये असमें जो अमेंडमेंट है अउसे में कबूल नहीं कर सकता। अब अस क्लॉज को पास किया जायेगा अैसी अुमीद करता हूं।

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That in line 4: for ‘one month’ substitute : ‘three days’.”

The motion was negatived.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“ That Clause 48 stand part of the Bill ”.

The motion adopted.

Clause 48 was added to the Bill.

Clause 49

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“ That Clause 49 stand part of the Bill ”

The motion was adopted.

Clause 49 was added to the Bill.

Clause 50

Shri Ch. Venkatrama Rao (Karimnagar) : I beg to move :

“That after line 5, add :

‘Provided that no such Court of Justice or any authority shall deprive a prisoner from interviews and letters and from him as a punishment’”.

Mr. Deputy Speaker : Amendment oved.

* श्री सी ایच - विन्कट राम राव:— मस्टर اسپیکر سر - کلاز (۵۰) میں میری امینڈمنٹ ہے جو پراویزوں کی شکل میں پیش کی گئی ہے - کلاز (۵۰) میں یہ بتایا گیا ہے کہ جو فورگوئنگ (Foregoing) کلازس یعنی ۳۶-۳۷-۳۸ اور ۳۹ وغیرہ ہیں اون کے علاوہ سوائے کورٹ کے حکم کے جیل کی کسی اتھارٹی کو اختیار نہیں رہیگا کہ کوئی سزا دے سکے - لیکن کلاز (۵۰) کے تحت کورٹ کو یہ اختیار رہتا ہے کہ اون سزائوں کے علاوہ بھی سزا دے سکے - میں نے اس سلسلہ میں یہ ترمیم پیش کی ہے - روزمرہ کے معاملات یعنی اوسکے لیٹرس وغیرہ یا اپنے اہل و عیال سے ملاقات وغیرہ اوسکو اس سے محروم کرنے کی سزا اختیار کورٹ کو نہیں رہنا چاہئے - کورٹ کو یہ اختیار نہ رہے کہ وہ انٹرویوز کو روک سکے - یا اوسکے لیٹرس کو

روک سکے۔ جیسا کہ موور آف دی بل نے کورٹ کے فور گوئنگ سکشنس کے علاوہ اختیارات دئے ہیں اون کے متعلق ہم کو کوئی عذر نہیں ہے۔ مگر اون دو امور کے ضمن میں جن کا ذکر میں نے اپنی ترمیم میں پیش کیا ہے کورٹ کو اختیار نہیں دینا چاہئے۔ دونوں کی حد تک کورٹ پر لمٹ (Limit) رکھنا چاہئے۔ اس لئے میں نے یہ امینڈمنٹ پراویژو کے طور پر ایڈ کرنے کے لئے پیش کی ہے کہ لیٹرس اور انٹرویوز کے ضمن میں اون کو آزادی رہنا چاہئے۔

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Speaker, Sir. I oppose this amendment, simply because this is not the occasion to put any restrictions on the powers of the Judiciary. This is not the place. In this Bill we are not providing for restricting the powers of the Courts. We have not given any powers to the courts under the provisions of this Bill ; no crimes or no offences will be tried by the courts. Therefore, there is no occasion for putting any restriction on the powers of the judiciary. This amendment, if I may use the word, is quite misplaced and request the hon. Member to withdraw it so that our legislation may be a consistent whole.

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—अध्यक्ष महोदय, यहां जो अमेंडमेंट रखी गयी मैं उसे कबूल नहीं करता हूं और न उसकी यहां पर जरूरत है। और यहां पर जिस तरह से अमेंडमेंट लाना भी मुनासिब नहीं है। कोर्ट को जो अखत्यारात दिये गये हैं उसमें सजायें भी बतायी गयी हैं। और कोर्ट के हुक्म के बिना वे सजायें नहीं दी जा सकती हैं। कोर्ट को जो अखत्यार दिया गया है वह किसी दफा में नहीं बल्कि बहुत से कानूनों में कोर्ट को जिस तरह के अखत्यारात दिये गये हैं। अगर यह अमेंडमेंट लानी हो तो वह कोसी दूसरी जगह होगी। यहां वह अमेंडमेंट नहीं लायी जा सकती है। जिस लिये जिस अमेंडमेंट को मैं कबूल नहीं करता हूं। मुन्हर ऑफ दी अमेंडमेंट उसे वापस लें तो अच्छा होगा।

Shri Ch. Venkatrama Rao : I beg leave of the House to withdraw my amendment.

The Amendment was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

"That clause 50 stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clause 50 was added to the Bill.

Clause 51

Shri L. K. Shroff : I beg to move :

"That in line 1 omit from 'of' to 'or' in line 2.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved :

Shri L.K. Shroff : If my amendment is accepted, this clause would read like this :

“No punishment of change of labour under section 46, clause (2), shall be executed until the prisoner to whom such punishment has been awarded has been examined by the Medical Officer, etc.”

This amendment of mine is only a consequential amendment because the hon. Deputy Minister has already accepted the amendment pertaining to whipping etc. Therefore, retaining this portion of this clause of ‘penal diet, either singly or in combination, or of whipping, etc.’ would be redundant and therefore I have moved this amendment. I hope the hon. Minister would not find it difficult to accept.

Shri B. D. Deshmukh : I want to move an amendment that after “or”, “in combination, or of whipping” also should be deleted as consequential because the punishment of whipping has been dropped and therefore the further words “in combination or of whipping” should also be dropped.

Shri. L. K. Shroff : I have moved it myself, Sir. My amendment is for deleting ‘of penal diet, either singly or in combination or of whipping, or’.

Shri Srinivasrao Ekhelikar : I accept the amendment.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 51, as amended, stand part of the Bill”

The motion was adopted.

Clause 51, as amended, was added, to the Bill.

Clause 52

Shri L.K. Shroff : I beg to move :

“That in line 10, omit from ‘and’ to ‘therefor’ in line 13”.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

Shri L.K. Shroff : Sir, this is again another consequential

amendment in sub-clause (2) of clause 52. The clause reads like this :

“In the case of every serious prison offence, the names of the witnesses proving the offence shall be recorded and in the case of offences for which whipping is awarded, the Superintendent shall record the substance of the evidence of the witnesses, the defence of the prisoner, and the finding with the reasons therefor.”

Now that the amendment in regard to whipping has been accepted, this portion of this clause again becomes redundant. Therefore I have moved this amendment. Sub-clause (2) of clause 52 will read like this if my amendment is accepted :

“In the case of every serious prison offence, the names of the witnesses proving the offence shall be recorded.” The clause will stop there.

Shri Srinivasrao Ekhelikar : This is also a consequential amendment. So I accept it.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 52, as amended, stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 52, as amended, was added to the Bill.

Clause 53

Shri Sham Rao Naik : I beg to move :

“That after line 19, add :

“(2). In case of conviction as provided under sub-clause (1), the prisoner shall have a right to appeal to such other court to which such court is subordinate, in the manner prescribed by rules made under this Act.”

Mr. Deputy Speaker : Amendement moved.

श्री. शामराव नाईक :—अध्यक्ष महोदय, मैंने अमेंडमेंट दफा ५३ में लायी है। इसमें मेरा मकसद यही है कि जेल अथॉरिटी की तरफ से जो सजायें दी जाती हैं, उनके बारे में फिर से मुराफा

करने का अख्तियार कैदी को कानून में नहीं दिया गया है जब कि हर कानून में अदालत से फैसला होन के बाद जिसके खिलाफ मुकद्दमा चलाया गया उसे दूसरे कोर्ट में मुराफा करने की बिजाजत दी जाती है लेकिन इस कानून के तहत कैदी को ऐसी कोअी बिजाजत नहीं दी गयी। जो सजा में जि स्ट्रेट देगा वह सिविल प्रोसिजर कोड के तहत होगी। लेकिन सजा देने के बाद यदि वह कैदी चाहे तो मुराफा नहीं कर सकता है। मेरा कहना अितना ही है कि यहां पर भी मुराफा करने की बिजाजत दी जानी चाहिये। और जो कोर्ट इसके सबॉरडिनेट होगा उसे अपील करने का अख्तियार होना चाहिये। यह अंक बिल्कुल सादी अमेंडमेंट है। मैं अुमीद करता हूं कि मिनिस्टर साहब इसे मंजूर करेंगे।

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—अध्यक्ष महोदय, जिस तरह के अमेंडमेंट की कोअी जरूरत नहीं है। कोर्ट से किसी को सजा होती है तो अुमके बारेमें जापते फौजदारी के तहत अपील करने का अख्तियार और मुराफा करने का अख्तियार मुलजिम को दिया गया है जिस लिये यहां पर जिस अमेंडमेंट की जरूरत नहीं ह।

Shri Sham Rao Naik : I beg leave of the House to withdraw my amendment.

The amendment was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 53 stand part of the Bill”.

The motion was adopted.

Clause 53 was added to the Bill.

Clause 54

Shri L. K. Shroff : I beg to move.....

Mr. Deputy Speaker : It is not necessary to move the amendment formally. The hon. Member can speak against the clause itself.

Shri L. K. Shroff : This is again another consequential amendment, Sir. Since the provision about the whipping has been deleted, and as this clause 54 concerns mainly with whipping, this clause also requires to be deleted.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 54 stand part of the Bill”.

The motion was negatived.

Clause 54 was deleted from the Bill.

Shri Srinivasrao Ekhelikar : I beg to move :

“That the existing Clauses 55 to 62 shall consequentially be renumbered as Clauses 54 to 61.”.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That the existing clauses 55 to 62 shall consequentially be renumbered as Clauses 54 to 61”.

The motion was adopted.

Clause 54 (Original Clause 55)

Shri Sham Rao Naik : I beg to move :

“That after line 14, add :

‘(3). Every jailor or officer of a prison subordinate to him who commits any offence in respect of prisoners liable to be punished under the Indian Penal Code of 1860, shall be punished on conviction and the prisoner or Superintendent shall report the commission of such offence to the Police Officer and such Police Officer shall proceed as if the offence was committed in his jurisdiction’.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

*श्री. शामराव नायक :—स्पीकर सर, जिस कानून में प्रिजन का डिस्प्लिन मेन्टेन करने के लिये जितने कवायद किये गये हैं और प्रोवीजन्स किये गये हैं और साथ साथ वहां के कैदी या जेल के अफसर उसकी खिलाफ वर्जी करें तो उनके लिये भी सजा की तजवीज की गयी है। लेकिन अगर कैदी के खिलाफ जेल के अथारिटीज कोभी गुन्हा करें या इन दफाओं में जो तजवीज की गयी है उससे हटकर कुछ मनमानी सजा कैदियों को दें, मसलन् अक कैदी को सिम्पल डिप्रिजनमेंट की सजा दी गयी हो और जेल के अफसर उसको कैद बामशक्कत की सजा दें और प्रिजनर या जेल सुपरिटेंडेंट उसके खिलाफ रिपोर्ट कर दें तो उस सूत्र में अफसरों के खिलाफ अदालत में कार्रवाई करने के लिये कोभी तजवीज नहीं रखी गयी है। मुस्तलिफ किस्म के जरायम वहां हो सकते हैं। यहां के बहुत से माननीय सदस्य जेल में डेटीन्यू की हैसियत से गये हैं और जाते हैं। उनको अनुभव है कि, जेलर या दीगर अफसर अपने अधिकारों के बाहर जाकर कैदियों को मनमानी सजा देते हैं और जिस तरह से जेल के कानून की खिलाफवर्जी करते हैं। अगर ऐसी बात हुयी तो उनको सजा दी जानी चाहिये और अगर वह गुनाह पिनल कोड के तहत आता है तो उसी कानून के तहत

सजा दी जाना जरूरी है। यह एक कमी जिस कानून में है। प्रिजनर्स भी अन्तर्गत होते हैं। कानून की खिलाफ वर्गी कर के अगर जेल के अफसर उनको मनमानी सजा देते हैं तो उनको सजा दी जाने के लिये भी यहां तजवीज की जानी चाहिये वरना यह कानून मुकम्मिल हुआ ऐसा हम कहने के लिये तैयार नहीं होंगे। जिसलिये मैं मूव्हर ऑफ दि बिल से अपील करूंगा कि जिस अमेंडमेंट को कबूल किया जाना जरूरी है।

श्री. श्रीनिवासराम अखेलीकर :—स्पीकर सर, मैं जिस तरमीम को कबूल नहीं कर सकता क्योंकि जिसके मूव्हर करने का मतलब यह मालूम होता है कि जिसको काबिले दस्तंदाजी पुलिस बनाया जाय। पुलिस जिनमें दरयाफ्त करे और अदालत में चालान पेश कर के सजा दिलाये। दफा ५३ के तहत कैदियों को अगर अदालत में सजा दिलाना है तो जेल के ओहदेदार उनको अदालत में पेश करते हैं, और जेलर के बारे में या जेल के ओहदेदार या उनके मातहतों के बारे में सजा देना है तो वह जेलर या जेल के सुपरिटेंडेंट उनको अदालत में पेश करके सजा दिला सकते हैं। लेकिन हर वक्त पुलिस के जरिये ही वह पेश की जानी चाहिये यह कहना नामुनासिब होगा। ताजीरात हिंद के तहत सजा दिलाने का काम सिर्फ पुलिस ही करती है ऐसी बात नहीं है। आवकारी के अफसर और को-आपरेटिव्ह के अफसर भी अदालत में चालान पेश कर के जुर्म करने वालों को सजा दिला सकते हैं। उसी तरह से जेल के ओहदेदारान गुन्हेगार को अदालत में पेश करें तो उसमें मुझे कोई खामी नहीं मालूम होती। उसके लिये यह जरूरी नहीं कि पुलिस को अतिरिक्त दी जाय और पुलिस तफतीश कर के सजा दिलाये। जिसलिये मैं जिस तरमीम को गैर जरूरी समझता हूं और उसको कबूल नहीं कर सकता।

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That after line 14, add :

“(3) Every jailor or officer of a prison subordinate to him, who commits any offence in respect of prisoners liable to be punished under the Indian Penal Code of 1860, shall be punished on conviction and the prisoner or Superintendent shall report the commission of such offence to the Police Officer and such Police Officer shall proceed as if the offence was committed in his jurisdiction”.

The motion was negatived.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That Clause 54 stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 54 was added to the Bill.

Clauses 55 and 56 (Original clauses 56 and 57)

Mr. Deputy Speaker : There are no amendments to these two clauses. The question is :

“That clauses 55 and 56 stand part of the Bill”.

The motion was adopted.

Clauses 55 and 56 were added to the Bill.

Clause 57 (Original clause 58)

Shri K. L. Narasimha Rao : I beg to move :

“That in lines 3 and 7 for ‘three months’, substitute ‘fifteen days’.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

Shri Ch. Venkatrama Rao : I beg to move :

“Omit lines 4 to 10”.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

శ్రీ కె. యల్. నరసింహారావు :—స్పీకర్ సర్, ఈ సెక్షన్ లో నాదీ ఒక అమెండుమెంటు ఉంది. అదే ఏమంటే, యీ యావజ్జీవ ఖైదీలపైలే జైల్ ఖలోకి తేబడ్డారో, వారిని జైల్ లో ప్రవేశపెట్టిననాటినుండి వరుసగా మూడు మాసాలవరకు సంకెళ్ళతో బంధించటం, అంటే దండాలు వేసే పద్ధతిని కొంతవరకు తగ్గిస్తే బాగుంటుందే అని. దండాలు వేసిన తరువాత వారు తమ కార్యక్రమములు చేసుకోవడానికి గాని, తాము చేయ వలసిన పనులకు గాని ఇబ్బంది వుంటుందే కాబట్టి; వారిని మూడు, నాలుగు మాసాలు వరకు అని పొడిగించే దానికన్నా, పదిహేను రోజులు ఉంటే సరిపోతుందనే ఉద్దేశంతో యీ సవరణ ప్రవేశపెట్టాను. దీనిని మంత్రిగారు తప్పకుండా అంగీకరిస్తారని ఆశిస్తున్నాను.

* شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ :- اسپیکر سر - کلاز ۵۸ میں جیسا کہ ابھی ایک آنریبل ممبر نے کہا.....

Mr. Deputy Speaker : It has become 57.

شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ :- کلاز ۵۷ میں جیسا کہ ابھی ایک آنریبل ممبر نے کہا فٹرس میں رکھنا نا مناسب ہے انہوں نے ۱۰ دن تک رکھنے کے لئے اسٹنٹ دیا ہے لیکن میں چاہتا ہوں کہ ایک دن بھی فٹرس میں نہ رکھا جائے کیونکہ جیل میں

بہت سی سہولتیں اس بات کے لئے دی گئی ہیں اور جیسا کہ موور خیال کرتے ہیں کسی کو عمر قید کے لئے سنٹنس ملا ہے یا کسی کی دماغی حالت ٹھیک نہیں رہتی ہے اور اس کے اپنی زندگی کو ختم کرنے کا اندیشہ ہو تو اسے فٹرس میں رکھنا ایک بڑی سختی ہوگی۔ اس کے لئے سالیٹری سلس ہیں اور ایسے تا حیات سزا پانے والے قیدی کو ان اندیشوں کی صورت میں وہاں رکھا جا سکتا ہے۔ (۱۰) دن نہیں ایک مہینہ رکھئے لیکن جن لوگوں کو تا حیات سزا دی جاتی ہے ان کو ایک ایک مہینہ تک رکھنا کس حد تک مناسب ہو سکتا ہے۔ سلس (Cells) نہ ہوں اور ان کے رکھنے کی کوئی سہولتیں نہ ہوں تو ایسا کیا جا سکتا ہے لیکن دوسری سزائیں دیکر ایک مہینے تک رکھنا مناسب نہیں ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ موور آف دی بل ان چیزوں کو ماننے والے نہیں ہیں لیکن میں کہوں گا کہ اگر رکھنا ہی چاہتے ہیں تو ۱۰ دن رکھئے۔ یہاں تو یہ رکھا گیا ہے کہ جیلر چاہے تو ایک مہینہ یا وہ مناسب سمجھے تو تین مہینے تک بھی رکھ سکتا ہے۔ تین مہینے سے زیادہ مدت تک رکھنا ہو تو آئی۔ جی۔ پی۔ کی منظوری لیکر ۶ مہینے یا ایک سال تک بھی رکھ سکتا ہے۔ میں یہ عرض کروں گا کہ اس میں دیگر کئی سہولتیں ہیں جن کے تحت مجبور کیا جاسکتا ہے۔ ان تمام سہولتوں کے باوجود تین مہینوں تک فٹرس میں رکھنے کی کوشش کی جا رہی ہے جو صحیح طریقہ نہیں ہے۔ اگر ضرورت سمجھتے ہیں تو سلس میں رکھا جا سکتا ہے۔ میں امید کرتا ہوں کہ آنریبل موور میرے اسٹیمٹ کو مان لیں گے۔

* شری اے۔ گرو ریڈی :- مسٹر اسپیکر سر۔ میں اس پورے کلاز کی مخالفت کرنا چاہتا ہوں۔ اگر کسی کو ٹرانسپورٹیشن (Transportation) کی سزا ہوئی ہے تو مدت سزا کو گھٹانے کے لئے جو رولس ہیں ان کے تحت ۱۰ سال تک جیل میں رکھا جا سکتا ہے۔ دس سال کے بعد جو شہری بننے والا ہے جو سوسائٹی میں داخل ہونے والا ہے اس کو کورٹ سے آتے ہی ایک اچھا شہری بنانے کی کوشش کرنی چاہئے۔ اگر سوی سائڈ (Suicide) کرنے کا ڈر ہے تو اس کے لئے فٹرس رکھتے ہیں لیکن میں کہوں گا کہ اگر وہ چاہے تو اپنا سر دیوار سے بھی ٹکرا سکتا ہے۔ اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ سوی سائڈ کے خیال سے فٹرس نہیں رکھے جاتے بلکہ سزا کے طور پر اور خوف پیدا کرنے کے لئے رکھے جاتے ہیں۔ قیدی کے دل میں یہ خیال پیدا کیا جاتا ہے کہ دیکھو اب ۲۰ سال تک تمہاری زندگی ہمارے ہاتھ میں ہے۔ تم کو غلام بنکر یہاں رہنا ہوگا۔ آنریبل مسٹر ہمارے اتنے لکچر سننے کے بعد بھی اس کو ماننے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ یہ ایک مافی ہوئی تھیوری (Theory) ہے کہ ریفارمس پنشنٹ (Reforms Punishment) کے ذریعہ نہیں کئے جاسکتے۔ اگر لائف سنٹنس (Life Sentence) والوں کو مارنا نہیں چاہتے ہیں اور ان کو ایک اچھا شہری بنانا مقصود ہے تو پھر اسے طریقے اختیار کرنا چاہئے جن سے وہ اچھے شہری بن سکیں۔ لیکن جو طریقے اختیار کئے جا رہے ہیں وہ تو فیوڈلزم (Feudalism) کے وقت کے طریقے ہیں اس لئے میں آنریبل ممبر انچارج آف دی بل سے درخواست کروں گا کہ وہ پورے کلاز کو ڈیلٹ (Delete) کریں۔

* श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—स्पीकर सर, जिस क्लॉज को अपोज करने के लियें मैं खड़ा हुआ हूं। हाउस के सामने मुझे यह रखना है कि जेल के मुख्तलिफ अफसरों के साथ मैंने कभी दफा बात की और अन्होंने मुझे से कहा कि दो तीन साल के जो सजायापत लोग होते हैं उनको काबू में रखना मुश्किल हो जाता है क्योंकि गुनाह करने की उनको आदत ही रहती है। लेकिन जिनको लाजिफ ट्रान्सपोर्टेशन की सजा होती है या जिनकी सजाएं मौत तबदील होकर लाजिफ ट्रान्सपोर्टेशन हो जाती है उनके बारे में यह पाया गया है कि आम तौर पर किसी अक मौकती प्रवोकेशन की वजह से जैसे जमीन के झगडों की वजह से ये लोग कुछ बात कर लेते हैं। लेकिन उसके बाद वे आम तौर पर पछताते हैं और यह देखा गया है कि जेल के अंदर उनका बर्ताव अकजम्प्लरी होता है। अन्होंने जेल के तमाम असूलों को आम तौर पर रखा है। मुझे यह भी बताया गया कि उनको पेरोल पर छोड़ा गया तो वे बराबर वक्त पर वापिस आये हैं और अन्होंने हमेशा रूल्स की पाबंदी की है। मुझे अक जेल के सुपरिंटेंडेंट ने मराठवाडे के बारे में कहा कि वहां जो लोग कतल कर के या लाजिफ ट्रान्सपोर्टेशन की सजा पाकर आते हैं वे बाद में जेल में अच्छे शहरी बन जाते हैं। जिस हालत को हम सामने रखें तो मैं समझता हूं कि आमरण कारावास की सजा जिनको होती है उनको अक अन्तखामी जजबे से देखना मुनासिब न होगा और असिलिये तीन महीने उनको फोर्ट्रिंग में रखना चाहिये यह ठीक नहीं मालूम होता। असिलिये बाकी कैदियों के साथ जिस तरह का बर्ताव होता है वैसे ही उनके साथ होना चाहिये। उनके लिये कोअी खास प्रोवीजन रखना मैं मुनासिब नहीं समझता। जैसे अभी अक आनरेबल मेंबर ने बताया हमारे सामने अक सवाल है कि जेल को हम अक रिफोर्मेटरी स्कूल बनाना चाहते हैं। आनरेबल होम मिनिस्टर साहब ने भी कहा था कि जेल का नाम ही मैं तबदील करना चाहता हूं। उसको रिफारमेटरी स्कूल या असा ही कोअी नाम रखना चाहता हूं ताकि सजा देने के जो स्थालात हैं वेही दूर हो जायें। अगर उनका कहना सही है तो हम आज उनकी तरफ अन्तखामी जजबात से क्यों देखें और उनके लिये खास प्रोवीजन क्यों करें? जिस लिहाज से ट्रान्सपोर्टेशन की सजा पानेवालों को तीन महीने तक फोर्ट्रिंग की कैद में रखना जरूरी नहीं है। उनको मालूम रहता है कि कानून के पाबंद रहेंगे तो ही हमको रेमीशन मिल सकता है और बीस साल की सजा दस साल तक कम हो सकती है। लंबी सजा होने का खयाल ही उनको डिसिप्लिन में रखता है। जिस लिये मैं समझता हूं कि जिस क्लॉज को रखना ही मुनासिब है। इसके लिये दूसरा अक आल्टरनेटिव्ह अमेंडमेंट है कि तीन महीने के बदले १५ दिन किया जाय लेकिन वह अक अलग सवाल है लेकिन जिस तरफ देखने का हमारा नुक्ते नजर क्या होना चाहिये उसको मैं अर्ज करना चाहता था।

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—स्पीकर सर, जो तरमीम जिसमें लाजी गयी है उसके बारे में यही कहना चाहता हूं कि जिस क्लॉज को थोड़ा सा गलत तौर पर समझा गया है। हर वक्त जब कभी यहां प्रिजन्स अैक्ट के बारे में बहस होती रही उसमें यही बार बार दोहराया जाता है कि जेल में जो लोग हैं उनके साथ अक अन्तखामी जजबसे बर्ताव किया जाता है, और अन्सानका सा सुलूख उनके साथ होना चाहिये। जिस अमर की कोशीश की जा रही है कि उनके साथ अन्सानकासा सुलूख किया जाय और उसके बारे में जनरल डिसकशन के वक्त मैंने कहा था कि आज अन्सानकासा सुलूख वहां किया जा रहा

है। उसके मुलाहिजे के लिये, उसको देखने के लिये मैं आप लोगों को दावत देना चाहता हूँ।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—पहले दावत देकर बाद में बिल लाते तो अच्छा होता।

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—जेल में रहनेवालों से, मैं मानता हूँ कि, अन्तखामी जजबात नहीं होना चाहिये और अन्सान के साथ हर जगह अन्सान कासा ही सुलूख होना चाहिये। अपोजिशन के मेंबरान प्रिजन बिल के वक्त अन्तखामी जजबात के असूल को पेश करते हैं लेकिन जागीरदारों के मुआवजे का बिल आता है तो उस वक्त अन्सानकासा सुलूख उनके साथ करने की कोशीश नहीं की जाती बल्कि उनका गला घोटने की कोशीश की जाती है। क्या जागीरदार अन्सान की तारीफ में से खारिज है?

شری اے۔ گروا ریڈی :— ہم چاہتے ہیں کہ جاگیرداروں کے ساتھ آپ جو سلوک کرنا چاہتے ہیں وہ پریزنس کے ساتھ روا رکھیں۔

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—यह मेरी समझमें नहीं आता।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—हम जागीरदारों को एक कामन मैन की तरह ही हैबिलिटेड करना चाहते हैं।

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—आप उनको रीहैबिलिटेड नहीं करना चाहते बल्कि उनका गला घोटना चाहते हैं।

यहां जो तीन महीने के लिये फेटर्स डाले जाते हैं वह सजा नहीं है। जैसा कि एक आन-रेबल मेंबर ने कहा उनको गुलाम बनाना है, यह बताना है कि जो चाहे सो हम कर सकते हैं। अगर ऐसा करना था तो तीन महीने ही क्यों हन्से दवाम बीस साल डाल सकते थे। जिसलिये यह समझना चाहिये कि यह सजा नहीं है बल्कि जिसके पीछे कुछ और जज्बात हैं। किसी आदमी को हन्सेदवाम की सजा हो जाती है तो उसकी दिमागी हालत में फर्क होता है और वह डेस्परेट हो जाता है। कुछ अर्से के लिये उसकी यह हालत रहती है। उसके बाद वह समझने लगता है कि अब मुझे यहां रहना है। जिस तरीके से उसमें जो फीलिंगज होते हैं कि अब मैं पूरे जन्म के लिये सोसायटी से अलाहिदा किया गया हूँ, अब मुझे यहां रह कर क्या करना है तो उस हालत में वह कभी कभी खुद को खतम करने की कोशीश करता है या वहां से भाग कर निकल जाने की कोशीश करता है या कभी दीवानेपन में दूसरों को तकलीफ देने की कोशीश करता है। जिन हालात से उसको बचाने के लिये यह प्रोविजन है। डेस्परेट हालत में वह दूसरों को या खुद को कुछ न कर बैठे जिसलिये एक मुद्दत तक उसको फेटर्स में रखना पड़ता है। यह सजा नहीं है बल्कि उसकी हिफाजत करना है। जिस लिहाज से कुछ अर्से तक जब तक वह अहसास उसके दिमाग से न निकल जाय यह अन्तजाम करना जरूरी होता है। जैसे आहिस्ता आहिस्ता बहुत बड़ा गम भी चला जाता है वैसे ही वहां रहने के बाद उसकी हालत बदल जाती है और वह और मामूली हालत में वापस आ जाता है तो उस सूरत में फेटर्स नहीं रखे जाते। जिस लिहाज से यह समझा गया है कि उस हालत के आने तक तीन महीने की मुद्दत की जरूरत है।

شری اے۔ گرو ریڈی :—کس سائیکالوجسٹ (Psychologist) یا اسپیشلسٹ (Specialist) نے آیکو بتایا۔

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—हयूमन सायकॉलोजी और तजरबा।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—जब वह सेल में बंद रहता है तो फिर फेटर्स की वहां क्या जरूरत है? जेल में सिंगल सेल और डबल सेल होते हैं और हमने उनको देखा है। उनके अंदर जब वे रहते हैं तो फिर फेटर्स डालने की क्या जरूरत है?

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—सेल में रहने के बाद भी खुदकशी हो सकती है या भाग जाने का अकदाम हो सकता है। इसलिये यह जरूरी है। दिमागी हालत उसकी वापस आने की हद तक ही यह अन्तर्जाम किया जाना जरूरी है। तीन महीने में अगर वह वापस नहीं आ सकी तो उस सूरत में उसके जिजाफे के लिये ज़िम्न दो हैं। ये दो क्लॉज उसकी सजा के लिये नहीं हैं बल्कि उसकी हिफाजत के लिये हैं। ऐसी हालत में मैं इस तरमीम को कबूल नहीं करता और जिसको आनरेबल मूव्हर वापस लेंगे ऐसी तक्को करता हूं।

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That in lines 3 and 7 for ‘three months’ substitute ‘fifteen days’”.

The motion was negatived.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“Omit lines 4 to 10”

The motion was negatived.

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—यहाँ एक शब्द ‘साठ’ है। वह साठ नहीं होगा बल्कि ५९ होगा। मैं इसके लिये यह तरमीम मुद्द करता हूं। क्योंकि यह कान्सिक्वेन्शियल है, कि यहां ६० के बजाय ५९ होंगे।

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

Shri Srinivas Rao Ekhelikar : Clause 57 says :

“Prisoners under sentence of transportation may, subject to any rules made under section 60 be confined in fetters for the first three months after admission to prison”.

Now the rule-making section will be 59. so instead of “60” it should be 59. I moved an amendment to this effect.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That in clause 57 in line 2 for ‘60’ substitute ‘59’”

The Motion was adopted.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 57, as amended, stand part of the Bill.”

The motion was adopted.

Clause 57, as amended, was added to the Bill”.

Clause 58 (Old Clause 59.)

Shri Ch. Venkatrama Rao : I beg to move :

“That in line 2 : Omit from “except” to “Superintendent” in line 4.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved :

* شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ - اسپیکر سر - کلاز ۵۸ میں یہ بتلایا گیا ہے کہ کلاز ۵۷ کے اختیارات جو سپرنٹنڈنٹ کو آئی - جی - پی کے توسط سے ملتے ہیں جیلر بھی انہیں استعمال کرنے کا مجاز ہوگا لیکن بعد میں اس کی اطلاع سپرنٹنڈنٹ کو کرنا ہوگا - میں موور آف دی بل کو یہ بتلانا چاہتا ہوں کہ کلاز ۳۰ میں یہ صاف صاف رکھا گیا ہے کہ

“Every such prisoner shall be confined in a cell apart from all other prisoners and shall be placed by day and night under the charge of a guard”.

یعنی جیلر کو یہ اختیار ہے کہ اگر وہ یہ سمجھے کہ قیدی کی دماغی حالت ٹھیک نہیں ہے - لیسکو سوسائڈ کمٹ کرنے سے بچانا چاہئے تو اسکو سل میں رکھ سکے گا اور ساتھ ساتھ گارڈ کا بھی انتظام کرے گا یعنی جیلر کو یہ اختیار رہے گا - محض سپرنٹنڈنٹ کو اطلاع دینے کی پابندی عائد کی گئی ہے - پہلے تو میں چاہتا ہوں کہ جیلر کو یہ اختیار نہ دیا جائے دوسرے پہلے یہ ٹھیک نہیں بیٹھتا - کلاز ۳۰ میں صاف صاف اختیار دیا گیا ہے اسلئے پھر اب اس کلاز میں اسکو رکھنے کی ضرورت نہیں ہے - اگر سپرنٹنڈنٹ چاہے تو یہ اختیار استعمال کرسکے گا اسلئے میں سمجھتا ہوں کہ موور آف دی بل میرے اس کلا ریفیکیشن (Clarification) کو مان لینگے -

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर:—स्पीकर सर, मैं जिस तरमीम को कबूल नहीं करता। जिसलिये कि “except in cases of urgent necessity” ” ऐसी सूरत में वह अख्तियार जेलर को दिया गया है। बाज वक्त यह होता है कि सुपरिटेण्डेंट दूर मुकाम पर होते हैं और मेडीकल ऑफिसर को सुपरिटेण्डेंट बनाया जाता है। अपने दीगर कार्यों की सहाय्य के बाद वह आठ रोज या तीन रोज में अक दफा जेल में आता है। जब तक सुपरिटेण्डेंट न अथवा अुस वक्त तक वह अख्तियार करती रहे तो अर्जेंट नेसीसिटी बाकी नहीं रहती। जिसलिये अर्जेंट नेसीसिटी (Urgent necessity) की सूरत में अुनकी अख्तियार दिया जाय और जिस लिहाज से वह अर्जेंटमें गैरजरूरी है। जिसलिये मैं जिसकी कबूल नहीं करता।

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That in line 2 : Omit from “except” to “Superintendent” in line 4”.

The motion was negatived.

Mr. Deputy Speaker : The question is :

“That clause 58 stand part of the Bill”.

The motion was adopted.

Clause 58 was added to the Bill.

Clause 59 (Original Clause 60)

Shri Ch. Venkatrama Rao : I beg to move :

“ Omit line 3 ”.

Mr. Deputy Speaker : Amendment moved.

* श्री सी ایच - विन्कट राम राव :- क्लॉज ५० में जो सब क्लॉज्जस हैं अस्का पहला सब क्लॉज्ज बहुत अहम है - अस्का क्लॉज्ज के तहत ये अख्तियार हुंगा के जमले रोलस हकूमत तियार करे ताके अन् रोलस के तहत जिल मिनिजमन्ट में सेहत हो - प्रिन्स अफन्स (Prisons offences) किया हैं और किया हैं अस्का हकूमत को मेलुम हुंजके हैं लिक्न अब दुबारा अस्को यहाँ लाना और ये अख्तियार रक्खना के कन्से अक्ल अक्ल हुंस्कते हैं और कन्से अफन्स हैं हुंस्कते मन्सब हैं ये और ये अख्तियार हकूमत को न होना चाह्ये - पहले ब्ल में असे प्राविजन लाये जांके हैं के कन्से अक्ल अफन्स हुंकरने हैं - पेर मकर अस्के डफिनिशन (Definition) के लये प्राविजन रक्खना मन्सब हैं अस्ले में ये अक्ल रक्खना हुं के ये अख्तियार हकूमत को न मले -

* श्री. व्ही. डी. देशपांडे :- अध्यक्ष महोदय, अिस बिल के सेक्शन ६० में बहुत अहम अलग अलग सब क्लॉज्जस काफ़ी हैं लेकिन में अभी अुनके डिटेल् में नहीं जाता हूं। लेकिन अेक चीज हुकूमत के सामने में रखना चाहता हूं। वह यह है कि आज अिस कानून के तहत जो रूल्स बनाये जायेंगे अुसका पूरा अख्तियार गव्हर्नमेंट को दिया गया है लेकिन मैंने कभी मर्तबा अिसके पहले भी कहा है कि यह सही नहीं है। जब की हमारे यहाँ जमहूरियत है और लोगों का अिलेक्टेड हाअुस हमारे स्टेट में मौजूद है तो अुसे भी मौका मिलना चाहिये। अिस कानून के लिहाज से जो रूल्स बनाये जायेंगे वह किस तरह से बनाये जायेंगे यह हाअुस के सामने आये और अुसपर गौर करने का मौका अिस हाअुस को मिले। हाअुस की अेक सर्बॉरडिनेट लेजिस्लेशन कमिटी है। लेकिन अुसका जितना काम होना चाहिये वह नहीं हो रहा है। कानून के तहत जो रूल्स बनाये जाते हैं अिस कमिटी के सामने आने चाहिये ताकि वे देख सकें की जो रूल्स बनाये गये हैं वे बराबर बनाये गये हैं या नहीं और लेजिस्लेशन बनाने का

जो मकसद था वह पूरा हो रहा है या नहीं। कभी बार जिस बात को हाउस के सामन रखा गया है। और आज फिर से रखना चाहता हूं। यह एक बहुत ही अहम बिल है। और इसी के बारे में एक अमेन्डमेंट ऑनरेबल मेंबर की तरफ से दी गयी थी। वह इस तरह से थी।

After line 67 add :

“Provided that all such rules made under this section shall be laid before the Assembly and shall not come into force unless approved by the Assembly”.

यह अमेन्डमेंट मुव्ह नहीं हुआ है। क्योंकि मेंबर किसी काम की वजह से यहां हाजिर नहीं थे। मुझे यदि जिजाजत दी जाय तो मैं वह अमेन्डमेंट मुव्ह करना चाहता हूं। मैं समझता हूं यह कानून खुद ही बहुत कॉम्प्लिकेटेड कानून है। और जिस कानून का जो मकसद है उसके तहत जो रूल्स बनाये जायेंगे वह उस मकसद के तहत हैं या नहीं यह देखने की जरूरत है। इसलिये जिस अमेन्डमेंट को मंजूर करने की जरूरत है। और मैं इसे मुव्ह करना चाहता हूं। अगर जिस अमेन्डमेंट को यों मुव्ह नहीं कर सकता तो मैं एक परेश अमेन्डमेंट की तौर पर इसे मुव्ह करना चाहता हूं। और अगर मैं अपनी तरफ से परेश अमेन्डमेंट के तौर पर मुव्ह करूं तो कोजी हर्ज नहीं होना चाहिये। जिस लिये मुझे मेरी अमेन्डमेंट मुव्ह करने की जिजाजत दी जाय।

“Provided that all such rules made under this section shall be laid before the Assembly and shall not come into force unless approved of by the Assembly”.

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—यह कोजी परेश अमेन्डमेंट मुव्ह करने का मौका नहीं है।

“Provided that all such rules under this section shall be laid before the Assembly”.

“Provided these rules shall be laid before the Assembly”.

I was requesting permission to move a fresh amendment to clause 60. That amendment was already given notice of by Shri K. Venkatrama Rao, but because of certain engagements he could not be present in the House. We feel that this amendment is very necessary. This Bill is a very complicated one and the rules, which are promised to be progressive and designed to reform the prisoners, should be placed before the House and the House should have an occasion to examine them. Therefore I request your permission, Mr. Speaker Sir, to move this amendment.

[Mr. Speaker in the chair]

Mr. Speaker : What is the amendment of the hon. Member?

Shri V. D. Deshpande : After line 67, add:

“Provided that all such rules made under this section shall be laid before the Assembly”.

Shri Srinivasrao Ekhelikar : How can a new amendment be allowed at this stage, Sir?

Shri V. D. Deshpande : The Speaker in his inherent right has the power to give permission. This amendment has already been given notice of and printed in the list and the hon. Deputy Minister is aware of it. Technically, it could not be moved because the hon. Member in whose name the amendment stands could not be present in the House. Therefore I am seeking to move the amendment now. I think there is no harm in allowing the amendment and it would not go against the spirit of the amendment as such.

شری جے - آئند راؤ - میں آپکی توجہ رول ۲۷ کی طرف مبذول کراتا ہوں -

“The Speaker shall have power to regulate the conduct of business in the Assembly in all matters not provided for in the Constitution or the Rules”.

Mr. Speaker : I would invite the attention of the House to rule No. 32 of the Assembly Rules :

“32 (2) If the Member when called on is absent, any other Member authorised by him in writing in this behalf may, with the permission of the Speaker, move the motion standing in his name. Such permission shall not be granted in the case of a statutory motion or motions relating to Bills, amendments to Bills or amendments to these rules, or motions of which notice is given under rule 176. If no Member has been so authorised, or such permission is not granted, the motion, other than a motion relating to a Bill to which the provisions of rule 145 apply, shall lapse”.

Therefore a general discretion cannot be allowed when there is a special provision negating it.

Shri V. D. Deshpande : I am not moving another member's amendment, but I am seeking to move a new amendment..

Mr. Speaker : The hon. Member requested that the amendment standing in another Member's name be allowed to be moved now.

Shri V. D. Deshpande : In the beginning I said I wanted to move a fresh amendment.

Mr. Speaker : To what rule did another Member refer to just now ?

Shri V. D. Deshpande : Rule 72.

(Pause)

Mr. Speaker : Rule 72 gives general powers to the Speaker but it does not apply to this case.

* شری اے۔ گروا ریڈی :— میں تھیریز میں گئے بغیر یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس بل پر کافی چرچا ہو چکی ہے۔ ہر سوال کے جواب میں یہ بتلایا گیا ہے کہ یہ تمام فسیلیٹیز (Facilities) رولس میں دی جانے والی ہیں۔ رولس میں جو جنت بتانا چاہتے ہیں ہم چاہتے ہیں کہ کم از کم انہیں اسمبلی کے سامنے لایا جائے۔ ہم ابھی دیکھیں کہ آپ کتنے فسیلیٹیز اس میں رکھتے ہیں۔ اور وہ اس بل کی اسپرٹ میں ہیں یا نہیں۔ یہ کہنا کہ کورٹ اسپر غور کر سکتا ہے میں کہوں گا کہ کوئی بھی کورٹ میں نہیں جاتا۔ کورٹ نہیں دیکھتی اور یہاں ہم جو ڈسکشن کرتے ہیں وہ بھی ملحوظ نہیں رکھے جاتے اس لئے میں کہوں گا کہ رولس اسمبلی کے سامنے آنا ضروری ہے۔

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—जो अमेंडमेंट जिस क्लॉज ६० में लायी गयी है वह में गैर जरूरी समझता हूँ। क्योंकि डेमोक्रेटिक सेटप में रूल मोंकिंग पावर गव्हर्नमेंट को ही डिलिगेट (Delegate) किये जाते हैं। और उसी के तहत रूलस बनाये जाते हैं। और हर कानून में ही लिखा जाता है कि जो रूलस बनाये जायेंगे वे जिस कानून के तहत ही होंगे। वह अँक्ट के खिलाफ तो नहीं रह सकते हैं। उसी तरह यहाँ भी लिखा गया है कि जो रूलस बनाये जायेंगे वे जिस अँक्ट के तहत ही बनाये जायेंगे। जिस लिये जिस अमेंडमेंट को लाने की जरूरत नहीं है। कानून के तहत ही रूलस बनते हैं और वैसे वे बने हैं या नहीं यह देखने का काम हाउस का नहीं है। उसके लिये अदालतें मौजूद हैं। जिस लिये लेजिस्लेशन कमिटी में रूलस जाने के बारे में जो अमेंडमेंट है वह गैर जरूरी है। जिस लिये मैं अमेंडमेंट को कबूल नहीं करता हूँ।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—अध्यक्ष महोदय, मेरी जो अमेंडमेंट है उसे कबूल करने के लिये मिनिस्टर साहब तैयार नहीं हैं। उन्होंने कहा कि डेमोक्रेटिक हुकूमत अभी आयी है। जो पुरानी हुकूमत थी उसकी डेमोक्रेसी में भी रूलस बनाने के अख्तियार गव्हर्नमेंट को ही दिये जाने चाहिये, ऐसा कहा गया। अँक्ट तरफ यह कहा जाता है कि यह पुरानी हुकूमत है, और दूसरी तरफ कहा जाता है कि यह नयी हुकूमत है। जिस में कुछ कांस्ट्रिक्शन दिखता है।

श्री. श्रीनिवासराय अखेलीकर :—कोयी कांस्ट्रिक्शन नहीं है। यह हुकूमत कयी सालों की पुरानी है, लेकिन आज अँक्त नये शकल में डिमोक्रेटिक सेटप के स्वरूप में वह हमारे सामने आयी है।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—यह हुकूमत पुरानी नहीं है। पुरानी हुकूमत को हुकूमत मानने के लिये मैं कभी तैयार नहीं हो सकता हूँ। वह एक लोगों को दबानेवाली और सताने वाली ताकत थी। जिस लिये मैं उसे तो छोड़ देता हूँ।

लेकिन यह एक बहुत अहम अंकट है। जिसमें काफी बातें आती हैं और जिसमें रूल्स को काफी अहमियत है। बहुत अहम बातों के बारे में रूल्स बनाने के अख्तियारांत गव्हर्नमेंट को दिये जा रहे हैं वर्क कैसा किया जाय, फर्जों कैसे दिया जाय, जिसके लिये क्या शरायत होने चाहिये, कंडीशनल रिलीज, पॅरोल, यह सब बातें रूल्स के तहत आनेवाली हैं। जिस लिये मैं सजेस्ट करना चाहता हूँ कि जो रूल्स बनाये जायेंगे वे हाजूस के सामने आना जरूरी है।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह एक गलतफहमी पैदा की जा रही है कि जिसमें हाजूस का बहुत ज्यादा वक्त जानेवाला है।

संबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी के सामने जो कोजी मसला लाया जायेगा वह किस तरह लाया जायेगा जिसके लिये हमारे पास कवायद मौजूद हैं।

Rule 203 : After each such order referred to in Rule 202 is laid before the Assembly the Committee shall, in particular, consider—

(i) whether it is in accord with the general objects of the Act pursuant to which it is made ;

(ii) whether it contains matter which is in the opinion of the Committee should more properly be dealt with in an Act of the Assembly ;

(iii) whether it contains imposition of taxation ;

(iv) whether it directly or indirectly bars the jurisdiction of a court ;

(v) whether it gives retrospective effect to any of the provisions in respect of which the Act does not expressly give any such power.

Rule 204 : (1) If the Committee is of opinion that any order should be annulled wholly or in part, or should be amended in any respect, it shall report that opinion and the grounds thereof to Assembly within one month of the commencement of a session of Assembly after the promulgation of such orders or within such earlier or later period which a statute of Assembly may have fixed for any specified case.

(2) If the Committee is of opinion that any other matter relating to any orders should be brought to the notice of the

Assembly, it may report that opinion and matter to Assembly.

Rule 205 : The report of the Committee shall be presented to Assembly in writing signed by the Chairman or, in his absence, by any Member of the Committee.

Rule 206 : The Speaker may issue such directions as he may consider necessary for regulating the procedure, etc.

बारबार यह कहा गया कि जब रूलस असेंबली के सामने आयेंगे तो उसपर सोचते समय ज्यादा वक्त खराब होगा। लेकिन ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी बनने के बाद आज तक उसके सामने एक भी मसला नहीं लाया गया है। यह सिर्फ कमिटी दिखाने के लिये बनायी गयी है। लेकिन यह बात जाहिर है कि जिसके पास कोजी काम देने के लिये गव्हर्नमेंट या ट्रेजरी बेंचेस घबराते हैं। आज तक जिस कमिटी के सामने कोजी भी मसले नहीं लाये गये हैं। यदि आप यह काम नहीं कर सकते हैं तो फिर प्रिविलेज कमिटी के रखने की भी कोजी जरूरत नहीं है। मेरा कहना यह है कि जिसमें हाउस का कोजी वक्त नहीं जानेवाला है और हाउस ने जो कमिटी सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन के नाम से बनायी है उसके सामने भी कोजी काम आज तक नहीं आया है।

डेमोक्रेटिक सेटप में जिस तरह के अख्तियारात हाउस को दिये जाने जरूरी हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि मिनिस्टर साहब या ट्रेजरी बेंचेस जिस तरह के अख्तियारात देने में क्यों घबराते हैं। यह तो एक डेमोक्रेटिक आमुदल्लूक है।

श्री. श्रीनिवासराम अखेलीकर :—सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी को यह अख्तियार होता है कि वह चाहे तो जो रूलस आदि बनते हैं उसे रिजेक्जामिन कर सकती है। ऐसी हालत में जिस अमेंडमेंट की जरूरत नहीं है। अगर कमिटी गौर करना चाहे तो कर सकती है। जिस लिये रूलस करने का अख्तियार जिस कमिटी को दिया जाय या उस के सामने यह रूलस रखे जाय, जिस तरह के तरमीम की कोजी जरूरत नहीं है कमिटी का अख्तियार कायम है। अगर वह चाहे तो बराबर स्कूटिनायिज कर सकती है।

दूसरी बात यह है ऑनरेबल लीडर ऑफ दी अपोजिशन ने जो अपनी तकरीर में कहा है कि वह कोजी नयी बात नहीं है। उसमें पुरानी ही बातों का रिपिटेशन किया गया है। जिस अंक्ट के तहत कोजी बातें उनका नजर में नहीं आती हैं। कितनी भी अच्छी बातें की गयीं तो भी उनका नजर में नहीं आती हैं। क्योंकि उनका देखने का जो नुक्ते नजर है वह ठीक नहीं है। मैंने तो जो जरूरी अमेंडमेंट थी वह पहले ही कबूल कर ली है। और मैं तबकू करता था कि अब ज्यादा अंतराजात नहीं किये जायेंगे लेकिन फिर भी अंतराजात किये गये। मैं यह भी जानता था कि जो भी अच्छी बातें जिस कानून में की गयी हैं उनका अंप्रिसियेशन नहीं किया जायेगा और मेरा वह अंदाज भी सही निकला मुझे उन तमाम अंतराजात का जवाब देने की जरूरत नहीं है। और मैं जिस अमेंडमेंट को कबूल नहीं करता हूँ

Shri V. D. Deshpande : I want to move only this much :

“Provided that all the Rules made under this Section shall be laid before the Assembly,” because automatically it means that they will be referred to the Subordinate Legislation Committee.

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Speaker, Sir. I think the amendment has been amended.

Mr. Speaker : The amendment has to be moved first. I allow him to move the amendment.

Shri V. D. Deshpande : I beg to move :

That in clause 60, after line 67, add the following :

‘Provided that all such Rules made under this Section shall be laid before the Assembly’.

Mr. Speaker : Amendment moved :

Shri Devisingh Chauhan : Mr. Speaker, Sir. The hon. Member from Ippaguda has brought a point which needs some clarification. The point of Subordinate Legislation has been put forward and therefore this amendment has been moved. There is a school of thought that Subordinate Legislation also should be brought before the Parliaments and the Assemblies.

Mr. Speaker : Why not in Hindi, so that all the Members may be able to follow the hon. Member.

श्री. देवीसिंह चौहान:—जो अमेंडमेंट पेश की गयी है उसमें यह कहा गया है कि रूल्स बनाने के बाद वे सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी के पास आने चाहिये। प्रालिमेन्टेरियन्स के जिसके बारे में दो तरह के ख्यालात हैं। एक का कहना है कि रूल्स बनाने के अधिकार पूरे तौर पर गव्हर्नमेंट को नहीं होने चाहिये बल्कि उन्हें सबॉर्डिनेट नोट लेजिस्लेशन कमिटी के सामने लाना चाहिये।

लेकिन आज कल के जो मॉडर्न ख्यालात हैं वे यही हैं कि जिस तरह के अखत्यारात गव्हर्नमेंट को दिये जाय तो कोई हर्ज नहीं है। सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन की पावर गव्हर्नमेंट को दिये जाय तो मुनासिब होगा ऐसा उनका ख्याल है। यदि जिन सब कामों को हाउस के मेंबर करने लगते हैं तो वक्त ज्यादा सर्फ

होता है और सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी को दूसरे जो अहम काम करने के रहते हैं उनके लिये वक्त नहीं मिलता है। जिसलिये जिस रूल मेकिंग का अख्त्यार गव्हर्नमेंट को ही दिया जाय तो मुनासीब होगा।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—गव्हर्नमेंट को रूल बनाने के कोअी अधिकार न दिये जाय ऐसा मेरा मन्शा नहीं है लेकिन जो रूल्स गव्हर्नमेंट में बनाये जाते हैं वह सबॉर्डिनेट लेजिस्लेशन कमिटी सामने आये और अनुपूर गौर किया जाय कि कानून के स्पिरिट में नियम हैं या नहीं।

श्री. देवीसिंह चौहान :—पार्लमेंटरी गव्हर्नमेंट में हुकूमत के तीन शोबे होते हैं। अक शोबेमे काम यह होता है कि कानून बनाये जायें। दूसरे शोबे का काम होता है कि कानून बराबर अप्लिमेंट किया जाय, यह शोबा अंडमिनिस्ट्रेटिव्ह होता है। और तीसरा शोबा यह देखता है कि कानून की खिलाफ वर्जी की जारही है क्या। जब कोअी रूल्स बनाये जाते हैं वे तब कानून के तहत बनाये जाते हैं या नहीं और ऑलट्रा वायरस रूल्स तो नहीं बनाये जाते हैं यह देखने का काम गव्हर्नमेंट का नहीं और न असंब्ली का यह काम रहता है बल्कि अदालतों पर यह काम छोड दिया जाता है।

हमारे असंब्ली के सामने कअी अहम सवालान्त हैं। और अन्हें अभी तक हमने हल नहीं किया है। डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड बिल वैसा ही पडा है अुसी तरह टाअन कमिटीज और म्युनिसिपालिटी का भी अहम बिल अभी तक वैसा ही पडा है। हैदराबाद में अभी अभी असंब्ली कायम हुअी है। अैसे हालातमें यदी हम रूल्स बनाने का काम भी लेंगे तो फिर हमारे जो अहम काम हैं वह रह जायेंगे। जिस लिये यह जो अमेंडमेंट लाअी गअी है अुसे वापस लिया जाय।

* *Shri V. D. Deshpande* : Mr. Speaker, Sir; I want a Ruling on this point. This point was raised by hon. Shri. Gopalrao Ekbote when he was not a Minister and he argued that under the Rules, subordinate Legislation Committee can take up the Rules for scrutiny. I again wish to point out that when a Bill was passed the Subordinate Legislation Committee has an inherent right to scrutinise all the rules under the Act whether it is specifically laid down in every Act that the Rules shall be scrutinized by the said Committee or laid before the Assembly. The Subordinate Legislation Committee has always the power to take up these rules for scrutiny. I want a ruling from the hon. Speaker to the effect that the rules shall be taken over for scrutiny and report presented to the House. I requested for a ruling at that time, but no ruling was given. I again request the Speaker for a ruling because, I personally feel that no such power is given by the rules to the Subordinate Legislation Committee.

The Minister for Local Govt. & Education (*Shri Gopal Rao Ekbote*) : As some statement is attributed to me, I think I should clarify the position.

I have never stated that the function of the Subordinate Legislation Committee is to scrutinise delegated legislation. It has never been the function of the Subordinate Legislation Committee.

**Shri V. D. Deshpande :* May I remind the hon. Minister that when the question of allotting 3 lakhs of rupees fund to the hon. Minister for Agriculture was before the House, I had given an amendment that the rules relating thereto should be laid before the Assembly ? The hon. Member had argued then that my amendment was absolutely unnecessary, as, according to him, the Subordinate Legislation Committee has every right to go into the rules. I do not have the proceedings relating thereto before me now, but the whole thing is there duly recorded. That position has of course later on changed and I accept that. I assert it should be specifically stated that the rules should be laid before the House.

Shri Gopal Rao Ekbote : I am sorry, I may remind the hon. Leader of the Opposition that that was not the statement that I had made on the floor of the House on that occasion. What I said was that the function of the Subordinate Legislation Committee was to point out the function of the various delegated powers usually embodied in the Acts. I had already expressed my views before the Subordinate Legislation Committee ; I had prepared an elaborate material concerning this matter and supplied each member of the Committee with a copy thereof. The question is still pending before the Subordinate Legislation Committee. It will therefore be too premature on the part of any hon. Member to come to any conclusion. The practice in vogue in the House of Commons is entirely different. I had already stated before the Subordinate Legislation Committee and I also had already elaborately stated in the House that the practice in vogue in the House of Commons is that they have an Act there. If they pass an Act under that Act, the delegated legislation is either kept on the Table of the House for forty days and then a motion is moved that the delegated legislation should be discussed or should not be discussed. There are two different processes to scrutinise the Bills—not by the Subordinate Legislation Committee but by the House itself, on the motion of a particular Member. That is the procedure prevalent in the House of Commons and it is only to that procedure that I had pointed out. I even now stress the necessity of having that kind of legislation here also, and I still adhere to that

view. As I said, the matter is pending before the Subordinate Legislation Committee and I earnestly request those hon. Members who are on that Committee to carry on that work expeditiously and see that the delegated legislation which is practically in vogue in every other State is made applicable here also. I do not think there is anything undemocratic in it. If we adopt that the particular Act should lay down the procedure, as is in vogue in the House of Commons. My only request is that the members of the Subordinate Legislation Committee should expedite the work and make useful suggestions to the House, so that the House can scrutinise the delegated legislation as and when it thinks fit.

مسٹر اسپیکر :- اب ۸ بجکر ۱۵ منٹ ہوچکے ہیں ۔ ہم نے یہ طے کیا تھا کہ کل کوئسچن آور کے بعد سیلاؤ منسٹر کے اسٹیٹمنٹ پر ڈسکشن ہوگا ۔ لیکن کل اس ڈسکشن سے پہلے ہم اس بل کو ختم کر لینگے ۔

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Wednesday, the 15th September, 1954.